लालसा और प्रेम

आर. एम. डोगरा, एम. ए.
(पंजाब विश्व-विद्यालय)

माडर्न पब्लिशर्ज़

नाटक के पात्र

जान गेब्रियल बाकमन—एक बैंक का संचालक रह चुका है ।

श्रीमती गेब्रियल बाकमन—उसकी पत्नी ।

अरहार्ट बाकमन—उनका पुत्र, एक छात्र ।

ईला रेन्थिम—श्रीमती बाकमन के साथ पैदा हुई बहिन ।

फोलडल—एक सरकारी दफ्तर का क्लर्क ।

फरीडा फोलडल—उसकी पुत्री ।

श्रीमती बाकमन की नौकरानी ।

श्रीमती विल्टन—अरहार्ट की प्रेमिका ।

शरत् ऋतु की एक सायंकाल रेन्थिम घराने के विशाल भवन में —क्रिश्चियाना के समीप ।

पहला अंक

[श्रीमती वाकमन का गोल कमरा। यह पुराने ढंग से और पुरानी चीज़ों से सजा हुआ है। पिछली खिड़की में से उद्यान का कुछ भाग दिखलाई देता है। सायंकाल का समय है और बरफ़ पड़ रही है। कमरे में आग जल रही है। सामने एक खिड़की है जिस पर भारी परदे लटके हुए हैं। दरवाज़े और खिड़की के बीच एक सोफ़ा पड़ा हुआ है। इसके सामने एक मेज़ है जिस पर कपड़ा बिछा हुआ है। मेज़ पर लैम्प है। इसके पास एक आराम कुर्सी है।

श्रीमती वाकमन सोफे पर बैठी हुई कुछ बुन रही है। वह एक वृद्धा स्त्री है। उसके बाल सफेद हैं और उसके हाथ बहुत सुन्दर हैं। उसने काले रेशम का भारी गाऊन पहना हुआ है। यह कुछ पुराना और घिसा हुआ है। कंधों पर उसने गरम शाल फेंका हुआ है। वह एक गुजरती हुई सलेज (Sledge) की घंटी की आवाज़ सुनती है।]

श्रीमती वाकमन—(सुनती है, उसके नेत्रों में चमक आ जाती है, और वह कहती है) मेरा प्यारा बेटा अरहार्ट ! आ गया।

[वह उठती है, और परदा हटा कर बाहर देखती है। निराश दिखाई देती है। सोफे पर बैठ कर फिर बुनना आरम्भ कर देती है। कुछ समय में दासी एक भेंट करने का कार्ड लाकर दिखलाती है।]

श्रीमती वाकमन—(शीघ्रता से) क्या अरहार्ट सचमुच आ गया ?

दासी—नहीं मालकिन, कोई स्त्री आप को मिलने आई है।

श्रीमती बाकमन—मेरा विचार है श्रीमती विल्टन आई हैं ?

दासी—(**समीप आकर**) नहीं यह तो कोई विचित्र सी स्त्री है।

श्रीमती बाकमन—(**कार्ड उठा कर**) देखूँ तो। (**पढ़ कर झट उठ खड़ी होती है, और ध्यान पूर्वक दासी की ओर देखती है**) क्या यह सचमुच मेरे लिए है ?

दासी—मालकिन मुझे यही कहा गया है।

श्रीमती बाकमन—क्या उसने कहा था कि वह बाकमन की धर्म पत्नी को मिलना चाहती है।

दासी—हाँ। उसने यही कहा था।

श्रीमती बाकमन—अच्छा तो उसको कह दो कि वह मुझे मिल सकती है।

[**दासी इस विचित्र स्त्री के लिए दरवाजा खोल कर बाहर चली जाती है। मिस ईला अन्दर आ जाती है। उसकी शकल अपनी बहिन से मिलती जुलती है और वह दुःखी दिखलाई देती है। उसके बाल घने और सफेद हैं। उसने गरम मखमल के वस्त्र पहने हुए हैं। दोनों बहिनें कुछ देर चुप खड़ी रहती हैं। हरेक प्रयत्न करती है कि दूसरी पहिले बात करे।**]

ईला—बहिन, तुम मुझे देखकर विस्मित दिखलाई देती हो।

श्रीमती बाकमन—क्या तुमने भूल तो नहीं की—कुर्की करने वाला तो साथ के घर में रहता है।

ईला—मैं आज उसे नहीं मिलना चाहती।

श्रीमती वाकमन—तो क्या मुझे मिलना चाहती हो ?

ईला—-हाँ, मैं तुम्हारे साथ कुछ बातें करना चाहती हूँ।

श्रीमती वाकमन-— (कमरे के मध्य आकर) अच्छा तो बैठ जाओ।

ईला—-धन्यवाद···मैं कुछ समय के लिए खड़ी ही रहना चाहती हूँ।

श्रीमती वाकमन—-जैसे तुम्हारी इच्छा। परन्तु अपने कोट के बटन खोल लो।

ईला——(कोट के बटन खोल कर) हाँ, यहाँ बहुत गरमी है।

श्रीमती वाकमन——मुझे तो सदा ठंड ही लगती है।

ईला——(कुछ देर उसकी ओर देखकर) हम एक दूसरे को आठ साल बाद मिली हैं।

श्रीमती वाकमन——हाँ। आठ साल से हमने एक दूसरे के साथ बातचीत नहीं की।

ईला—हाँ, यह सच है। मैं यह कह सकती हूँ कि साल में एक बार जब मैं कुर्की कराने वाले को देखने आती थी, तो तुमने भी मुझे देखा होगा।

श्रीमती वाकमन—एक दो बार मैंने तुम्हें देखा है।

ईला—मैंने भी तुम्हें एक दो बार खिड़की में खड़े देखा है।

श्रीमती वाकमन—तुम्हारी आँख बहुत तेज़ मालूम होती है। हमारा पिछला वार्तालाप इसी कमरे में हुआ था।

ईला—(उसे चुप करने का प्रयत्न करती है) हाँ ! हाँ !! मुझे याद है ।

श्रीमती वाकमन—उनके जेल से छूटने के एक सप्ताह पहिले ।

ईला—(पीछे हटकर) जाने दो यह बातें ।

श्रीमती वाकमन—(धीमी आवाज में) यह उनके जेल में से छूटने के एक सप्ताह पहले की बात है ।

ईला—हाँ ! हाँ !! हाँ !!! मैं उस समय को कभी न भूलूँगी··· इस बात को याद करके मन दुःखी होता है ।

श्रीमती वाकमन—(उदासीन होकर) फिर भी मैं इस बात का विचार किए बिना नहीं रह सकती—(हाथ मल कर) मुझे यह समझ नहीं आता कि एक घराने पर ही इस प्रकार की विपत्ति कैसे आ सकती है और फिर हमारे जैसे पुराने घराने पर । विधाता ने हमें इस विपदा के लिए क्यों चुना ?

ईला—बहिन हमारे सिवा और कई घराने थे जिन पर यह बिजली गिर सकती थी—।

श्रीमती बाकमन—मैं तो दूसरे घरानों का विचार नहीं करती । उनके लिए तो कुछ धन का ही प्रश्न था । परन्तु मेरे और अरहार्ट के लिए तो यह सर्वनाश था । मेरा पुत्र उस समय कितना छोटा था । हम दोनों ने किसी का क्या बिगाड़ा था, कि हमें यह अपमान सहना पड़ा ।

ईला—(सावधानी से) बहिन, मुझे बताओ, उसने इस विपत्ति को कैसा सहन किया ?

श्रीमती वाकमन—क्या तुम अरहार्ट के विषय में पूछती हो ?

ईला—नहीं, उसके पिता के विषय में ।

श्रीमती वाकमन—(**तिरस्कार पूर्वक**) तुम्हारा क्या विचार है कि मैं कभी उसको पूछती हूँ ?

ईला—तुम्हें पूछे बिना ही पता चल सकता है ।

श्रीमती वाकमन—(**विस्मित होकर उसकी ओर देखती है**) क्या तुम समझती हो कि मैं कभी उससे मिलती हूँ या उससे बातचीत करती हूँ ।

ईला—अच्छा, यह बात है !

श्रीमती वाकमन—वह पुरुष जो पाँच साल तक जेल में रहा— (**हाथों से अपना मुख ढक लेती है**) मेरे लिए यह कितने अपमान की बात थी ।—नहीं, नहीं, मैं उसे कभी नहीं मिल सकती ।

ईला—(**इसकी ओर कुछ देख कर**) बहिन, तुम्हारा मन बहुत कठोर है ।

श्रीमती वाकमन—हाँ, उसके लिए मेरे मन में कोई दया नहीं है ।

ईला—फिर भी वह तुम्हारा पति है ।

श्रीमनी वाकमन—क्या उसने कचहरी में नहीं कहा था कि मैंने उसके सर्वनाश की नींव रखी ? मैं ने बहुत अपव्यय किया है ।

ईला—तो क्या यह झूठ है ?

श्रीमती वाकमन—उसने ही मुझे अधिक खर्च करने की

आदत डाली—वही कहता था कि हमें बड़े ठाठ से रहना चाहिए ?

ईला—हाँ, मुझे पता है।···परन्तु तुम्हें उसको समझाना चाहिए था। परन्तु तुमने ऐसा नहीं किया।

श्रीमती वाकमन—मुझे क्या पता था कि जो धन वह मुझे ख़रचने के लिए देता था वह उसका अपना नहीं था। और वह स्वयं मुझ से दस गुना अधिक घर को नष्ट करता था।

ईला—मेरे विचार में उसकी पदवी पर उसे ऐसा करना पड़ता था—कम से कम किसी हद तक—।

श्रीमती वाकमन—(**तिरस्कार पूर्वक**) वह मुझे सदैव यही कहता था कि हमें ठाठ से रहना चाहिए। वह चार घोड़ों की गाड़ी पर इस प्रकार फिरता था कि जैसे वह कोई राजा है। और वह जहाँ जाता लोग उसके सामने सिर झुका कर खड़े हो जाते थे (**हँसकर**) और सारे देश में लोग उसे जॉन गेब्रियल कहकर बुलाते थे, जैसे कि वह कोई महाराजा हो। उसे सब बहुत बड़ा आदमी समझते थे।

ईला—(**चमक कर**) उस समय वह सचमुच ही एक बहुत बड़ा आदमी था।

श्रीमती वाकमन—हाँ बाहरी दिखावे से···परन्तु उसने मुझे कभी नहीं बताया कि उसकी वास्तविक दशा क्या थी ? और वह सारा धन कहाँ से लाता था।

ईला—नहीं, नहीं····और किसी दूसरे मनुष्य को भी यह पता नहीं लगा।

श्रीमती वाकमन—मुझे दूसरों की परवाह नहीं—परन्तु यह उसका धर्म था कि कम से कम मुझसे तो सच कहता—और इसने यह नहीं किया, और मेरे साथ भी दिल खोलकर झूठ बोलता रहा——।

ईला—(बात काटकर) बहिन यह बात न थी, संभव है उसने कुछ बातें तुम्हें नहीं बताईं, परन्तु उसने झूठ नहीं बोला ।

श्रीमती वाकमन—जो तुम्हारी इच्छा हो उसे कह डालो, बात एक ही है । अंत में भाँडा फूट गया ।

ईला—(अपने आप से) सर्वनाश हो गया—उसका और दूसरों का ।

श्रीमती वाकमन—(सिर उभार कर) ईला, मैं तुम्हें यह बता देना चाहती हूँ, कि मैंने अभी हार नहीं मानी । विश्वास रखो, कि मैं अपनी दशा सुधार कर रहूँगी ।

ईला—(उत्सुकता से) तुम्हारा इससे क्या अभिप्राय है ?

श्रीमती वाकमन—मैं अपने नाम, सम्मान और सम्पत्ति को फिर से बढ़ाऊँगी । अपने बिगड़े हुए जीवन को फिर सुधारूँगी—मेरे पास एक व्यक्ति है जो पिता के लाए हुए अपमान को मान में बदल लेगा ।

ईला—बहिन ! बहिन !!

श्रीमती वाकमन—मैं तुम्हें बताना चाहती हूँ कि एक बदला लेने वाला जीवित है जो अपने पिता के किए हुए सब अपराधों को धो डालेगा ।

ईला—तुम्हारा संकेत अरहार्ट की ओर है ?

श्रीमती वाकमन—हाँ अरहार्ट ! मेरा पुत्र सारे बिगड़े हुए खेल को फिर बनायेगा और परिवार के लिए नया नाम पैदा करेगा।

ईला—यह सब कैसे होगा ?

श्रीमती वाकमन—यह अवश्य करना ही होगा···यह मैं नहीं बता सकती कि यह कैसे होगा। पर मुझे यह पता है कि ऐसा होकर ही रहेगा। (उसकी ओर ध्यानपूर्वक देखकर) ईला, सच बताओ कि क्या यह बात तुम्हारे भी मन में न थी? चाहे उस समय अरहार्ट छोटा सा बालक था !

ईला—मैं ठीक तरह से नहीं कह सकती।

श्रीमती बाकमन—तो फिर तुम उसे संकट के समय अपने घर क्यों ले गई ?

ईला—इसीलिए कि उस समय तुम उसकी देख-भाल नहीं कर सकती थीं।

श्रीमती बाकमन—हाँ, उस समय यह मेरे लिए सम्भव न था और उसके पिता को भी अच्छा बहाना मिल गया··· जब अरहार्ट तुम्हारे पास रह रहा था।

ईला—(क्रोध से) तुम ऐसी बातें कैसे कर सकती हो ?

श्रीमती वाकमन—(जला कटा मुँह बनाकर) तो तुम ने जान गेब्रियल के पुत्र को अपने पास रखने का निर्णय कैसे कर लिया। जैसे कि वह तुम्हारा अपना पुत्र हो। बच्चे को मुझसे छीन कर अपने पास उस समय तक रखना जबकि वह बड़ा हो

गया (संदेह से उसकी ओर देखकर) ईला, इसका क्या कारण था ? तुमने उसे अपने पास क्यों रखा ?

ईला—मैं उससे बहुत स्नेह करती थी।

श्रीमती बाकमन—उसकी माँ से भी अधिक ?

ईला—(असली बात का उत्तर न देकर) मैं इस विषय पर कुछ नहीं कह सकती। हाँ, तुम्हें यह तो पता है कि अरहार्ट बचपन में कितना दुर्बल था ?

श्रीमती बाकमन—ईला, क्या वह दुर्बल था ?

ईला—हाँ मेरा यही विचार था—उस समय वह दुर्बल ही था, और पश्चिमी घाट पर यहाँ से बहुत कम ठंड होती है।

श्रीमती बाकमन—(कटु हास्य के साथ) क्या सचमुच यह बात ठीक है ? (रुक कर) यह ठीक है कि अरहार्ट के लिए तुमने बहुत कुछ किया है। (बात करने का ढंग बदलकर) हाँ तुम धनवान थीं। (मुस्करा कर) तुम कितनी भाग्यवती हो ! तुमने अपना सब धन बचा लिया था।

ईला—(दुःखित होकर) मैंने इसके लिए कोई प्रयत्न नहीं किया। बहुत देर के बाद मुझे यह विचार आया कि जो कम्पनियों के हिस्से मेरे नाम थे वे बच गए हैं।

श्रीमती बाकमन—मुझे तो इन बातों की कुछ समझ नहीं है। मैं केवल यह कहती हूँ कि तुम भाग्यवती थीं। परन्तु जब तुमने अरहार्ट को पढ़ाने का भार अपने ऊपर लिया, तो तुम्हारा क्या लक्ष्य था ?

ईला—(बहिन की ओर देखकर) मेरा लक्ष्य ?

श्रीमती बाकसन—आखिर तुम्हारा क्या अभिप्राय था ? तुम उसे क्या बनाना चाहती थीं ?

ईला—मैं चाहती थी कि अरहार्ट सुख से जीवन बिता सके ।

श्रीमती बाकमन—(तिरस्कार पूर्वक) हमारी परिस्थिति में जो लोग हों उन्हें सुख के अतिरिक्त और भी सोचना पड़ता है ।

ईला—और क्या ?

श्रीमती बाकमन—पहिले तो अरहार्ट ने इस तरह रहना है कि जो कलंक पिता ने उसके नाम पर लगाया हुआ है, वह मिट सके । फिर उसने मेरे मान को भी बढ़ाना है ।

ईला—बहिन मुझे यह बताओ कि क्या अरहार्ट का भी यही लक्ष्य है ?

श्रीमती बाकमन—(कुछ घबराकर) हाँ, मेरी तो यही आशा है ।

ईला—यह तो उससे तुम्हारी माँग दिखाई देती है ।

श्रीमती बाकमन—मेरा और अरहार्ट का एक ही उद्देश्य है ।

ईला—(शोकपूर्ण स्वर में) तुम्हें अपने पुत्र पर पूरा भरोसा है ?

श्रीमती बाकमन—हाँ, उस पर मुझे पूरा भरोसा है, तुम इस बात का विश्वास रखो ।

ईला—तब मेरा विचार है कि वास्तव में तुम प्रसन्न हो ।

श्रीमती वाकमन—हाँ मेरा पुत्र मेरी प्रसन्नता का कारण है, परन्तु घर की दशा मेरे हर्ष को डुबो देती है ।

ईला—(आवाज बदल कर) मेरे साथ सारी बात दिल खोल कर कर डालो । इसीलिए मैं तुम्हारे पास आई हूँ ।

श्रीमती वाकमन—क्या ?

ईला—मैं इस विषय पर तुमसे बात करनी चाहती थी—क्या अरहार्ट तुम लोगों के पास रह सकता है ?

श्रीमती वाकमन— (तीव्रता के साथ) अरहार्ट यहाँ मेरे पास नहीं रह सकता ? उसे शहर में ही रहना होगा ।

ईला—उसने भी मुझे यही लिखा था ।

श्रीमती वाकमन—उसे वहाँ रह कर ही पढ़ना होगा । परन्तु कुछ काल से वह हर शाम को मेरे पास आता है ।

ईला—क्या मैं उसे मिल सकती हूँ ? मैं उससे तुरन्त कुछ बात करना चाहती हूँ ।

श्रीमती वाकमन—वह अभी नहीं आया, वह अभी आने वाला है ।

ईला—क्यों बहिन वह अवश्य आ गया होगा । मुझे उस के पैरों की आहट ऊपर वाली छत से आ रही है ।

श्रीमती वाकमन—(जल्दीसे ऊपर देखकर) ऊपर वाले बरामदे में ?

ईला—जब से मैं आई हूँ, उसके चलने फिरने की आवाज़ सुन रही हूँ ।

श्रीमती वाकमन—(दूसरी ओर देख कर) यह अरहार्ट नहीं है, ईला ।

ईला—(अचम्भे से) अरहार्ट नहीं ? फिर यह कौन है ?

श्रीमती वाकमन—यह वे हैं।

ईला—(चुपके से) वाकमन ?—जॉन गेब्रियल वाकमन ?

श्रीमती वाकमन—वे इस प्रकार इधर उधर फिरते रहते हैं। सवेरे से शाम तक प्रतिदिन वे ऐसा ही करते हैं ?

ईला—मैं ने भी लोगों से ऐसा ही सुना था।

श्रीमती वाकमन—लोगों को हमारी बातें करने के सिवा और क्या काम है ?

ईला—अपने पत्रों में अरहार्ट ने मुझे यह लिखा है कि उसके पिता अकेले रहते हैं। और उसकी माता भी ऐसा ही करती है। वह ऊपर वाली छत पर और आप नीचे।

श्रीमती वाकमन—हाँ यह ठीक है। आठ साल हुए जव वह जेल से छूटकर आए, तव से हम इसी तरह रह रहे हैं।

ईला—मैं यह कभी नहीं मान सकती थी कि ऐसा हो सकता है। मेरे विचार में ऐसा हो ही नहीं सकता।

श्रीमती वाकमन—वास्तविक स्थिति यही है और यह कभी बदल नहीं सकती।

ईला—(उसकी ओर देखकर) इस तरह जीना तो मरने से भी बुरा है।

श्रीमती वाकमन—तुम सच कहती हो।

ईला—पता नहीं, वह इस दुःख को कैसे सहारते हैं ?

श्रीमती वाकमन—सवेरे से शाम तक उनके पैरों की

आवाज को सुनना ! और इस घर में आवाज़ भी बहुत साफ़ सुनाई देती है ।

ईला—हाँ, यह आश्चर्य की बात है कि आवाज़ इतनी साफ़ है !

श्रीमती वाकमन—मुझे ऐसा जान पड़ता है जैसे कि एक बीमार भेड़िया जंगल में इधर उधर चक्कर काट रहा हो । (सुनकर कहती है) सुनो कैसे इधर उधर फिर रहा है !

ईला—इनकी दशा बदल नहीं सकती ?

श्रीमती वाकमन—उसने अपनी दशा बदलने का कोई प्रयत्न ही नहीं किया ।

ईला—क्या तुम पहला कदम नहीं उठा सकतीं ?

श्रीमती वाकमन—(क्रोध पूर्वक) मैं ! सोचो कि उसने मेरे साथ कैसा घोर अन्याय किया है । इस भेड़िये को ऊपर ही फिरने दो ।

ईला—मुझे इस कमरे में बहुत गरमी लग रही है । मुझे कुछ वस्त्र उतारने की आज्ञा दो ।

श्रीमती वाकमन—मैं ने तो तुम्हें पहिले ही कहा था ।

[ईला अपनी टोपी और कोट उतार कर मेज़ पर रख देती है ।]

ईला—क्या कभी घर के बाहर तुम उन से मिलती हो ?

श्रीमती वाकमन—(कड़वी हँसी हँसकर) आपका आशय समाज में मिलने से है ?

ईला—मेरा आशय है कि जब वह बाहर घूमने जाते हैं, जंगल में या—।

श्रीमती बाकमन--वह कभी बाहर नहीं जाते ।

ईला—सायंकाल के अंधेरे में भी नहीं ?

श्रीमती बाकमन—किसी समय भी नहीं ?

ईला—(भरे मन से) उनका बाहर जाने के लिए कभी मन नहीं करता ?

श्रीमती बाकमन—नहीं, उनका बड़ा कोट और टोपी बड़े कमरे में लटके हुए हैं ।

ईला—जिस कमरे में हम बचपन में खेला करते थे ?

श्रीमती बाकमन--(सिर हिलाकर) कभी कभी सायंकाल के समय ऐसा प्रतीत होता है कि वे उतर कर नीचे आ रहे हैं । किन्तु आधी सीढ़ियाँ उतर कर वे फिर ऊपर ही चढ़ जाते हैं ।

ईला—क्या उनके मित्र उन्हें कभी मिलने नहीं आते ?

श्रीमती बाकमन—उनका कोई मित्र नहीं है ।

ईला—कभी तो उनके बहुत मित्र हुआ करते थे ।

श्रीमती बाकमन—आपने उन सबको छोड़ दिया है । कभी वे दोस्तों के दोस्त थे !

ईला—हाँ बहिन, यह सच बात है ।

श्रीमती बाकमन—(बड़े जोर से) मैं तो यह समझती हूँ कि यह उनके मित्रों की बड़ी नीचता थी, कि उन्होंने धन की हानि को इतना महत्त्व दिया । बाकमन के कारण उनको कुछ

पैसे की ही हानि हुई थी, इससे अधिक तो और कुछ नहीं हुआ।

ईला—(उसकी बात का उत्तर न देकर) तो वे छत पर अकेले ही रहते हैं।

श्रीमती वाकमन—हाँ, ऐसे ही है। लोग मुझे बताते हैं कि एक क्लर्क या मुंशी कभी कभी उन्हें मिलने आता है।

ईला—क्या सचमुच ? इस व्यक्ति का नाम फोलडल है। यौवन में ये दोनों मित्र थे।

श्रीमती वाकमन—मेरा भी ऐसा ही विचार है। मैं उसे नहीं जानती। भले दिनों में वह हमारे मिलने जुलने वालों में से न था।

ईला—तो अब वह वाकमन को मिलने आता है ?

श्रीमती वाकमन—हाँ, वह कभी-कभी यह कृपा करता है। किन्तु वह अंधेरा होने पर ही आता है।

ईला—फोलडल को भी बैंक टूटने पर हानि हुई थी।

श्रीमती वाकमन—मैं ने भी सुना था कि इसे भी थोड़े से धन की हानि हुई थी—।

ईला—(कुछ जोर से) पर जो भी उसके पास था खो दिया।

श्रीमती वाकमन—(मुस्करा कर) उसके पास बहुत ही थोड़ा धन था।

ईला—जब अभियोग चल रहा था, तो उसने अपनी हानि के विषय में कुछ नहीं कहा ?

श्रीमती वाकमन—मैं तुम्हें यह बता देना चाहती हूँ कि अरहार्ट ने उसकी हानि पूरी कर दी है।

ईला—(**विस्मित होकर**) अरहार्ट यह कैसे कर सकता था ?

श्रीमती वाकमन—वह फोलडल की सबसे छोटी कन्या को पढ़ाता रहा है, जिस से वह कमा कर खा सकती है। मुझे विश्वास है कि उसका पिता उसके लिए यह न कर सकता था।

ईला—हाँ, उसका पिता उसके लिए कुछ भी न कर सकता था।

श्रीमती बाकमन—और फिर अरहार्ट ने उसे गाना वजाना सिखाने का भी प्रबन्ध कर दिया है। और अब उसने इतनी संगीत विद्या सीख ली है कि वह कभी कभी आकर बाकमन को पियानो वजा कर सुनाती है।

ईला—तो उसकी अब तक संगीत विद्या में रुचि है ?

श्रीमती बाकमन—हाँ। उसके पास वह पियानो है जो तुम ने उसे भेजा था…जब यह विचार था कि वह घर लौट कर आएगा।

ईला—तो फोलडल की लड़की इस पियानो को बजाती है ?

श्रीमती बाकमन—हाँ, कभी कभी सायंकाल के समय। यह सब कुछ भी अरहार्ट ने किया है।

ईला—क्या वह बेचारी शहर से आती है और फिर वहाँ लौट जाती है ?

श्रीमती बाकमन—नहीं उसे ऐसा करने की आवश्यकता

नहीं है। अरहार्ट ने उसके रहने का प्रबन्ध श्रीमती विल्टन के साथ कर दिया है, और वह हमारे घर के पास ही रहती है।

ईला—(उत्सुक होकर) श्रीमती विल्टन !

श्रीमती वाकमन—वह बड़ी अमीर है। तुम उसे नहीं जानतीं ?

ईला—मैंने उसका नाम तो सुना है। श्रीमती फैनी विल्टन, क्या यह ठीक है ?

श्रीमती वाकमन—हाँ यह ठीक है।

ईला—अरहार्ट ने कई बार मुझ से उसके विषय में कहा है। क्या वह आजकल यहाँ रहती है ?

श्रीमती वाकमन—हाँ उसने यहाँ एक कोठी ले ली है।

ईला—सुना है कि उसने अपने पति को छोड़ दिया है ?

श्रीमती वाकमन—कई साल हुए उके पति को मरे हुए।

ईला—किन्तु मरने से पूर्व उसने उसे छोड़ा था।

श्रीमती वाकमन—वह उसे छोड़कर चला गया था। इस में श्रीमती विल्टन का कोई दोष नहीं।

ईला—बहिन क्या तुम उसे अच्छी तरह जानती हो ?

श्रीमती वाकमन—हाँ बहुत अच्छी तरह। वह हमारे पास ही रहती है, और कभी कभी मुझे मिलने भी आ जाती है।

ईला—क्या तुम उसे चाहती हो ?

श्रीमती वाकमन—वह बड़ी चतुर है, और उसकी परख स्वच्छ है।

ईला—आपका तात्पर्य यह है कि वह लोगों की परख अच्छी करती है ?

श्रीमती वाकमन—विशेषतः लोगों की परख में वह अरहार्ट को बहुत अच्छी तरह समझती है। वह उसके चरित्र और आत्मा को समझती है। परिणाम यह है कि वह उसकी पूजा करती है। और वह कर भी क्या सकती है ?

ईला—(**बड़ी निपुणता से**) तो फिर वह अरहार्ट को तुम से अधिक जानती है ?

श्रीमती वाकमन—उसके घर आने से पहिले, अरहार्ट शहर में उसे बहुत मिला करता था।

ईला—(**बिना सोचे**) यह होते हुए भी वह शहर से चली आई ?

श्रीमती वाकमन—(**विस्मित होकर**) यह बात होते हुए भी—तुम्हारा इससे क्या मतलब है ?

ईला—इसमें कोई विशेष बात नहीं।

श्रीमती वाकमन—यह बात तुमने बड़े विचित्र ढंग से कही है। तुम्हारा इससे कोई विशेष प्रयोजन था ?

ईला—(**उसकी ओर देखकर**) हाँ, बहिन तुम ठीक समझी।

श्रीमती वाकमन—तो फिर स्पष्ट बात करो।

ईला—पहिले तुम्हें मैं यह बात बताना चाहती हूँ कि अरहार्ट पर मेरा भी कुछ अधिकार है। तुम्हारा इस विषय में क्या विचार है ?

श्रीमती वाकमन—(**कमरे के चारों ओर देखकर**) निस्संदेह। तुमने उस पर बहुत धन लगाया है।

ईला—इस कारण नहीं, बहिन। परन्तु इस लिए कि मैं उसे चाहती हूँ।

श्रीमती बाकमन—(घृणा पूर्वक मुस्कान के साथ) मेरे पुत्र को चाहती हो ? क्या यह हो सकता है ? जो कुछ हो चुका है, उसके बावजूद ।

ईला—हाँ, यह हो सकता है। और यह ठीक है मुझे अरहार्ट बहुत प्यारा है । इतना प्रेम मैं इस अवस्था में किसी और को नहीं दे सकती ।

श्रीमती बाकमन—हाँ हाँ, मान लिया कि तुम उसे चाहती हो । फिर क्या ?

ईला—उसे आपत्ति में देखकर मेरा मन दुःखी होता है ।

श्रीमती बाकमन—अरहार्ट को किस खतरे का सामना करना है ?

ईला—पहिला खतरा तो उसे तुम से है ।

श्रीमती बाकमन—मुझ से !

ईला—और दूसरा श्रीमती विल्टन से ।

श्रीमती बाकमन—(चकित होकर उसकी ओर देखती है) और तुम अरहार्ट के विषय में ऐसी बातें सोच सकती हो ? मेरे पुत्र के विषय में जिसने जगत में महान् कार्य करने हैं ?

ईला—उसने महान् कार्य !

श्रीमती बाकमन—तुम्हें यह साहस कैसे हुआ कि उसका उपहास करो ?

ईला—तुम्हारा यह विचार है कि अरहार्ट की आयु का युवक, जिसमें जवानी की उमंग है अपने आप को किसी नियोग के लिये न्योछावर करेगा ?

श्रीमती वाकमन—(ज़ोर से) हाँ मैं जानती हूँ कि वह अवश्य ऐसा करेगा।

ईला—(सिर हिलाकर) तुम इस बात को नहीं जानतीं, और न ही तुम्हारा इस पर विश्वास है।

श्रीमती वाकमन—मैं यह नहीं मानती।

ईला—यह केवल तुम्हारा सुहावना स्वप्न है, जिसके बिना तुम हताश हो जाओगी।

श्रीमती बाकमन—मैं सचमुच हताश हो जाऊँगी (ज़ोर से) और ईला मैं कह सकती हूँ कि तुम यही देखना चाहती हो।

ईला—(सिर ऊँचा करके) हाँ, मैं यह देखना पसन्द करूँगी परन्तु मैं यह नहीं चाहती कि अपनी वात पूरी करने के लिए अरहार्ट का बलिदान करो।

श्रीमती बाकमन—(धमकी के साथ) तुम माँ और पुत्र के बीच आना चाहती हो।

ईला—मैं तुम्हारे कड़े शासन से उसको छुटकारा दिलाना चाहती हूँ।

श्रीमती बाकमन—इस बात के लिए समय बीत चुका है। इतने साल तुमने उसे अपने जाल में फाँस रखा—पन्द्रह साल तक—किन्तु अब मैंने उसे तुम से वापिस छीन लिया है।

ईला—मैं फिर तुमसे छीन लूँगी। (दबी आवाज़ से) इससे पहिले भी हम दोनों ने एक मनुष्य की आत्मा के लिए घोर युद्ध लड़ा है।

श्रीमती वाकमन—हाँ, और उसमें विजय मेरी ही हुई थी।

ईला—(**तिरस्कार पूर्वक मुस्कान से**) क्या अब भी तुम्हारा विचार है कि वह जीत कहला सकती है ?

श्रीमती वाकमन—(**घबराकर**) नहीं, परमात्मा जानता है कि तुम्हारी यह बात ठीक है।

ईला—इस बार भी तुम्हारी विजय पराजय ही होगी।

श्रीमती वाकमन—ऐसा नहीं हो सकता। क्योंकि एक माता अपने पुत्र पर अधिकार के लिए लड़ रही है।

ईला—नहीं—क्योंकि तुम केवल उस पर अधिकार जमाना चाहती हो।

श्रीमती वाकमन—और तुम क्या चाहती हो ?

ईला—(**स्नेह पूर्वक**) मैं उसका स्नेह चाहती हूँ—उसकी आत्मा—उसका हृदय।

श्रीमती वाकमन—(**वेग पूर्वक**) यह तुम्हें इस संसार में नहीं मिल सकते।

ईला—(**उसकी ओर देखकर**) इस विषय में तुमने उसे पहले ही सचेत कर रखा है ?

श्रीमती वाकमन—हाँ, मैंने ऐसा किया है। क्या इस बात की झलक उसके पत्रों से नज़र नहीं आती ?

ईला—(**सिर हिलाकर**) हाँ, कुछ समय से उस के पत्रों में तुम्हारा प्रभाव दिखाई दे रहा है।

श्रीमती वाकमन—(**चिढ़ा कर**) मैंने इन आठ सालों का पूरा लाभ उठाया है। मैं ने उसे अपनी देखभाल में रखा है।

ईला—(संयम के साथ) मेरे विषय में तुमने अरहार्ट को क्या कहा है ? क्या तुम मुझे यह बतला सकती हो ?

श्रीमती बाकमन—हाँ, मैं तुम्हें बता सकती हूँ।

ईला—तो कृपया बतलाओ।

श्रीमती बाकमन—मैं ने उसे केवल सच कहा है।

ईला—क्या ?

श्रीमती बाकमन—इसके जीवन के प्रति दिन मैं ने एक बात उस पर अंकित करने का प्रयत्न किया है कि उसे यह नहीं भूलना चाहिए कि हमें इस तरह जीवित रहने के लिए आपका धन्यवाद करना है।

ईला—बस केवल यही ?

श्रीमती बाकमन—इस तरह की बात दिल में चुभती है। मैं भी इसे अनुभव करती हूँ।

ईला—परन्तु इस बात का तो उसे पहिले ही पता था।

श्रीमती बाकमन—जब वह घर वापस लौटा तो वह भी यही समझता था कि तुमने यह सब कुछ हार्दिक स्नेह से किया है। परन्तु अब वह यह नहीं मानता।

ईला—अब वह क्या मानता है ?

श्रीमती बाकमन—अब उसे सच्ची बात का पता है। मैंने उससे पूछा था क्या कारण है कि तुम्हारी मासी ईला हमें कभी मिलने नहीं आती—।

ईला—(उसकी बात काटकर) उसे आगे ही पता है कि मैं यहाँ क्यों नहीं आती।

श्रीमती वाकमन—अब वह इस बात को अधिक अच्छी प्रकार समझता है। तुमने उसे बताया था कि तुम्हारे यहाँ आने से मुझे और उसके पिता को दुख होगा।

ईला—बात भी यही है।

श्रीमती वाकमन—अरहार्ट अब तक यह बात नहीं मानता।

ईला—तुमने उसे क्या सिखा दिया है?

श्रीमती वाकमन—अब वह सच्ची बात जानता है कि तुम हमसे घृणा करती हो, और हमें तुच्छ समझती हो। और तुम यह दिखावा करना चाहती हो कि यह सत्य नहीं। एक बार तो तुमने यह सलाह की थी कि अरहार्ट को मुझसे छीन लो। ईला ज़रा सोचो—तुम यह बात भूल नहीं सकतीं।

ईला—नहीं—मैं उस समय आप लोगों को मिलने से घबराती थी। जब कलंक ताज़ा था, और अभियोग कचहरी में चल रहा था। अब मैं अरहार्ट को तुमसे नहीं छीनना चाहती।

श्रीमती वाकमन—अब यदि तुम्हारी यह इच्छा भी हो तो इस से कोई अंतर नहीं पड़ता। अरहार्ट को मेरी आवश्यकता है, तुम्हारी नहीं। तुम दोनों एक दूसरे के लिए मर चुके हो।

ईला—(**शीतलता पूर्वक**)—चलो देखें। मैं यहाँ ही दरवाज़े के बाहर रहूँगी।

श्रीमती वाकमन—(**आँखें फाड़कर उसकी ओर देखती है**) यहाँ इस घर में?

ईला—हाँ, यहीं।

श्रीमती बाकमन—यहाँ हमारे पास ? क्या तुम रात भर यहाँ रहोगी ?

ईला—यदि आवश्यकता पड़ी तो मैं जीवन भर यहाँ रहूँगी ।

श्रीमती बाकमन—(संभल कर) बहुत अच्छा ईला, यह घर तुम्हारा है ।

ईला—यह तो केवल बातें ही हैं ।

श्रीमती बाकमन—हर चीज़ तुम्हारी है । जिस कुर्सी पर मैं बैठी हूँ वह तुम्हारी है । मेरी चारपाई भी तुम्हारी है । रोटी भी मैं तुम्हारी दी हुई खाती हूँ ।

ईला—इन सब बातों का और कोई प्रबन्ध नहीं हो सकता ? बाकमन अपने नाम पर कोई सम्पत्ति नहीं रख सकता क्योंकि कोई न कोई आकर उसे छीन लेगा ।

श्रीमती बाकमन—हाँ मुझे पता है कि हमें आपके दान और दया पर पड़े रहने के सिवाय और कोई चारा नहीं ।

ईला—(शांतिपूर्वक) निश्चय, तुम इस स्थिति को ऐसे ही समझ सकती हो ।

श्रीमती बाकमन—हाँ यह ठीक है । तुम कब बाहर जाना चाहती हो ?

ईला—(उसकी ओर देखकर) तुम मुझे बाहर निकालना चाहती हो ?

श्रीमती बाकमन—(बड़ी उत्तेजना से) क्या तुम यह विचार कर सकती हो कि मैं तुम्हारे साथ एक घर में रह

सकूँगी ? इससे तो मैं यह अच्छा समझूँगी कि मैं सड़कों पर मारी-मारी फिरूँ या किसी निकेतन में जाकर रहने लगूँ।

ईला—अच्छा तो मुझे अरहार्ट को अपने साथ ले जाने दो।

श्रीमती वाकमन—अरहार्ट ? मेरा अपना पुत्र ? मेरा बच्चा ?

ईला—हाँ; फिर मैं सीधी अपने घर चली जाऊँगी।

श्रीमती वाकमन—(**कुछ देर सोच कर**) अरहार्ट को स्वयं निर्णय कर लेने दो कि हम दोनों में से वह किसके पास रहना चाहता है।

ईला—(**शंका सहित उसकी ओर देखकर**) यदि तुमने निर्णय उस पर छोड़ा तो तुम घाटे में रहोगी।

श्रीमती वाकमन—हाँ मैं ऐसा ही करना चाहती हूँ। चलो मेरे पुत्र को हम दोनों में से किसी को चुन लेने दो।

ईला—मुझे ऐसी आवाज़ आई है जैसे कोई आ रहा हो—

श्रीमती वाकमन—फिर यह अरहार्ट ही होगा।

[**कोई दरवाजा जोर से खटखटाता है। दरवाज़ा खुलने पर श्रीमती विल्टन अन्दर आती है। उसने संध्या के वस्त्र पहने हुए हैं। दासी घबराई हुई उसके पीछे आती है। दरवाज़ा आधा खुला रहता है। श्रीमती विल्टन की आयु लगभग तीस साल की है। वह अतीव सुन्दर है और उसका शरीर भरा हुआ है। उसके नेत्रों में चमक है, और उसके बाल बड़े लम्बे और घने हैं।**]

श्रीमती विल्टन—मेरी प्यारी श्रीमती वाकमन नमस्कार!

श्रीमती वाकमन—(**रूखेपन से**) श्रीमती विल्टन नमस्कार!

(दासी को इशारा करके) कमरे में से लैम्प निकाल कर उसे जला दो।

[दासी लेम्प लेकर चली जाती है।]

श्रीमती विल्टन—(ईला को देखकर) मुझे क्षमा करना आपको तो कोई मिलने आया हुआ है।

श्रीमती बाकमन—यह मेरी बहिन है जो अभी आई है।

[अरहार्ट आधा दरवाजा खोल कर अन्दर आ जाता है। इस युवक ने अच्छे वस्त्र पहने हुए हैं, और उसकी मूँछें नई-नई उग रही हैं।]

अरहार्ट— (अत्यन्त प्रसन्न दिखाई देता है) यह क्या ! मासी ईला यहाँ आई हुई हैं (जल्दी से उसकी ओर जाकर उसका हाथ पकड़ लेता है) क्या यह सम्भव है कि तुम यहाँ हो ?

ईला—(अपनी बाहु उसके गले में डाल लेती है) अरहार्ट, मेरे प्यारे बेटे ! तुम कितने बड़े हो ! तुम्हें फिर देखकर मुझे कितना आनन्द हुआ है !

श्रीमती बाकमन—(तेजी से) इसका क्या मतलब है अर-हार्ट ? क्या तुम बड़े कमरे में छिपे हुए थे ?

श्रीमती विल्टन—(शीघ्रता से) अरहार्ट, मेरे साथ ही आया है।

श्रीमती बाकमन—(उसकी ओर देखकर) अरहार्ट क्या यह सच है ? तुम पहले अपनी माँ के पास नहीं आते ?

अरहार्ट—मैं थोड़ी देर के लिए श्रीमती विल्टन को मिलने चला गया था—छोटी फरीडा को बुलाने।

श्रीमती बाकमन—क्या वह भी तुम्हारे साथ है ?

श्रीमती विल्टन—हाँ, हम उसे हाल में छोड़ आए हैं।

अरहार्ट—(खुले दरवाज़े में से किसी को आवाज़ देकर) फरीडा ऊपर वाली छत पर चली जाओ।

[ईला अरहार्ट की ओर देखती है। वह कुछ घबराया हुआ दिखाई देता है। उसके चेहरे पर झेंपने के चिह्न हैं। दासी लैम्प जलाकर लाती है और दरवाज़ा बन्द करके बाहर चली जाती है।]

श्रीमती वाकमन—(बनावटी शिष्टाचार के साथ) श्रीमती विल्टन, मुझे आशा है कि आज शाम आप हमारे पास रहेंगी।

श्रीमती विल्टन—मैं आपका धन्यवाद करती हूँ। परन्तु मुझे कहीं जाना है। हमें हिंकलस ने बुलाया है। और हम उनके घर जा रहे हैं।

श्रीमती वाकमन—(उसकी ओर देखकर) हम! दूसरा कौन तुम्हारे साथ है ?

श्रीमती विल्टन—(हँस कर) वास्तव में मुझे केवल अपने विषय में ही कहना चाहिए था, परन्तु मुझे उस घराने की स्त्रियों ने कहा था कि अरहार्ट को भी साथ ले आना, यदि वह मुझे मिल जाए।

श्रीमती वाकमन—और ऐसा दिखाई देता है कि वह आप को मिल गया।

श्रीमती विल्टन—भाग्यवश वह मेरे घर आ गया—फ्रीडा को बुलाने।

श्रीमती वाकमन—(रूखेपन से) अरहार्ट मुझे यह विचार न था कि तुम हिंकलस के घराने से परिचित हो।

अरहार्ट—(**चिढ़कर**) मैं उन्हें भली प्रकार नहीं जानता। माँ, तुम अच्छी तरह जानती हो कि मेरा किस-किस से परिचय है।

श्रीमती विल्टन—आप इस बात का विचार न करें। उस घर में जा कर लोग बहुत प्रसन्न होते हैं। वह भले लोग हैं और अतिथियों का सत्कार करते हैं। उनके घर में बहुत सी युवा स्त्रियाँ हैं।

श्रीमती बाकमन—(**विशेष उच्चारण से**) श्रीमती विल्टन, यदि मैं अपने पुत्र को अच्छी तरह जानती हूँ तो वह लोग उसे मिलने के योग्य नहीं हैं।

श्रीमती विल्टन—ओह मेरे भगवान् ! वह भी तो युवक है।

श्रीमती बाकमन—हाँ भाग्यवश, वह एक युवक है।

अरहार्ट—(**अपनी अधीरता छिपा कर**) माँ यह स्पष्ट है कि मैं आज शाम को हिंकलस के घर नहीं जा सकता। मैं यहाँ तुम्हारे और ईला मासी के पास रहूँगा।

श्रीमती बाकमन—मुझे पता था कि तुम ऐसा ही करोगे।

ईला—देखो अरहार्ट तुम मेरे लिए घर न ठहरना।

अरहार्ट—बहुत अच्छा मासी जी ! मैं वहाँ जाने के विषय में सोच ही नहीं सकता। (**श्रीमती विल्टन की ओर देखकर**) पर इसका किस प्रकार प्रबन्ध किया जाए ? तुम कह चुकी हो कि मैं वहाँ जाऊँगा।

श्रीमती विल्टन—(**प्रफुल्लवदन से**) तुम क्या बातें कर

रहे हो। जब मैं उनके घर अकेली जाऊँगी तो मैं उनसे कह दूँगी कि तुम किसी विशेष कारण से नहीं आ सके।

अरहार्ट—(**संकोच से**) चलो अच्छा है, यदि आप समझती हैं कि यह कोई बुरी बात नहीं है।

श्रीमती विल्टन—मुझे हाँ और न करने का पूरा अभ्यास है। तुम्हारी मासी अभी आई हैं, तुम उन्हें अकेला छोड़ कर कैसे जा सकते हो, तुम्हें एक अच्छा पुत्र बनना चाहिए।

श्रीमती बाकमन—(**चिढ़ कर**) पुत्र !

श्रीमती विल्टन—चलो गोद लिया हुआ पुत्र समझ लो।

श्रीमती बाकमन—हाँ तुम यह कह सकती हो।

ईला—मेरा तो यह विचार है कि हमें गोदिया माँ का असली माँ से अधिक आभारी होना चाहिए।

श्रीमती बाकमन—क्या तुम्हारा यही अनुभव है ?

श्रीमती विल्टन—मुझे शोक के साथ कहना पड़ता है कि मुझे तो अपनी माता को जानने का अधिक अवसर नहीं मिला। किन्तु यदि मुझे भी कोई माता गोद ले लेती, शायद मैं इतनी नटखट न होती जितना लोग मुझे समझते हैं। (**अरहार्ट की ओर देखकर**) तब तुम एक अच्छे लड़के की तरह घर पर ठहरो और माता जी और मासी जी के साथ बैठकर चाय की प्याली पियो। (**स्त्रियों को**) श्रीमती बाकमन और ईला जी, नमस्कार !

अरहार्ट–(**उसके पीछे जाकर**) चलो कुछ दूर मैं आपको छोड़ आता हूँ।

श्रीमती विल्टन—(**उसे लौट जाने को कहती है**) तुम मेरे साथ एक कदम भी न चलो। मुझे अकेला घूमने का अभ्यास है। (**दरवाज़े के पास खड़ी होकर उसकी ओर देखती है**) अरहार्ट अब सावधान हो जाओ ! मैं तुम्हें चेतावनी देती हूँ।

अरहार्ट—मैं सावधान क्यों रहूँ ?

श्रीमती विल्टन—(**हँस कर**) जब सड़क पर मैं अकेली और उदास होकर चलूँगी तो मैं तुम पर जादू करने का प्रयत्न करूँगी।

अरहार्ट—(**हँसकर**) सचमुच ! क्या ऐसा प्रयत्न आप एक बार फिर करने लगीं ?

श्रीमती विल्टन—(**सरलता से**) सावधान रहो। सड़क पर जाते हुए मैं अपने मन में कहूँगी "अरहार्ट झट अपनी टोपी पकड़ लो।"

श्रीमती बाकमन—आप क्या समझती हैं कि वह झट पकड़ लेगा।

श्रीमती विल्टन—हे राम ! हाँ वह झट अपनी टोपी पकड़ लेगा। फिर मैं कहूँगी "अपना ओवरकोट पहन लो। और मेरे पीछे-पीछे आ जाओ। जैसा मैं तुम्हें कहती हूँ करो।"

अरहार्ट—(**हँस कर**) आप इस बात का भरोसा रखें।

श्रीमती विल्टन—(**एक उँगली उठा कर**) जैसा मैं तुम्हें कहती हूँ। जैसा मैं तुम्हें कहती हूँ—नमस्कार !

[**वह हँस पड़ती है, और स्त्रियों की ओर देखकर दरवाज़ा बन्द करके बाहर चली जाती है।**]

श्रीमती वाकमन—क्या वह सचमुच इस प्रकार की लीला रचती है ?

अरहार्ट—कदाचित नहीं। आप यह कैसे सोच सकती हैं। वह यह सब बातें हँसी मज़ाक से करती है। (कुछ देर ठहर कर) चलो श्रीमती विल्टन की बातें बन्द करो। (वह ईला को आराम कुर्सी पर बिठा देता है, और उसके पास खड़ा हो जाता है।) मैं चकित हूँ कि आपने इतनी लम्बी यात्रा जाड़े में की ?

ईला—मुझे विवश होकर करनी पड़ी।

अरहार्ट—सचमुच ! ऐसा क्यों ?

ईला—तुम यह मुझ से पूछते हो ? मुझे शहर में अपने आप को डाक्टर को दिखाने के लिए आना ही पड़ता था।

अरहार्ट—मैं प्रसन्न हूँ कि आपने ऐसा किया।

ईला—(मुस्कान के साथ) क्या तुम इस बात पर प्रसन्न हो ?

अरहार्ट—मैं इस बात पर प्रसन्न हूँ कि अन्त में आपने ऐसा करने की सलाह की।

श्रीमती वाकमन—(रुखाई से) ईला, क्या तुम बीमार हो ?

ईला—(उस पर कड़ी दृष्टि डाल कर) आपको भली प्रकार पता है कि मैं बीमार हूँ।

श्रीमती वाकमन—मुझे पता है कि कई सालों से तुम्हारा स्वास्थ्य कोई बहुत अच्छा नहीं है।

अरहार्ट—जब मैं आप से पिछली वार मिला तो मैंने आप से कहा था कि आप अपने आपको किसी डाक्टर को दिखाएँ।

ईला—मेरे घर के समीप कोई ऐसा डाक्टर नहीं जिस पर मुझे विश्वास हो। और उस समय मुझे इस बात की आवश्यकता भी नहीं दिखाई दी।

अरहार्ट—तो मासी जी, क्या अब आप का रोग वढ़ गया है ?

ईला—हाँ वेटा ! अब मेरी दशा आगे से ख़राब है।

अरहार्ट—किन्तु किसी तरह का डर तो नहीं ?

ईला—इस विषय में मेरे लिए कुछ कहना कठिन है।

अरहार्ट—(**जोर से**) तो मेरे विचार में आपके लिये घर लौट कर जाना ठीक नहीं।

ईला—मेरा इस समय लौटने का विचार नहीं।

अरहार्ट—आप अपने लिये कोई अच्छे से कमरे एकान्त में ले लो।

ईला—आज मैं उन कमरों में गई थी जहाँ मैं पहले रहा करती थी।

अरहार्ट—वहाँ आपको हर तरह की सुविधा थी।

ईला—किन्तु मेरा वहाँ ठहरने का विचार नहीं।

अरहार्ट—क्यों ?

ईला—यहाँ आकर मैंने अपना विचार बदल लिया है।

अरहार्ट—(**विस्मित होकर**) सचमुच सलाह बदल ली है ?

श्रीमती बाकमन—(**ऊपर देखे बिना बुनती जाती है**) अरहार्ट तुम्हारी मासी यहाँ अपने घर में रहेगी।

अरहार्ट—(कभी मां की ओर कभी मासी की ओर देखता है) यहाँ हमारे साथ ! क्या यह सच है ?

श्रीमती वाकमन—यहाँ प्रत्येक वस्तु तुम्हारी मासी की है।

ईला—अरहार्ट इस समय मैं यहाँ ही रहूँगी। कुछ समय के पश्चात् इस घर के एक भाग में, मैं स्वयं अपना प्रबन्ध कर लूँगी।

अरहार्ट—यह बहुत अच्छा विचार है। यहाँ बहुत से कमरे अच्छे हैं। किन्तु इस समय तो आप लम्बी यात्रा के पश्चात् बहुत थकी हुई होंगी ?

ईला—हाँ मुझे बहुत थकावट है।

अरहार्ट—इसलिए आपको जल्दी सो जाना चाहिये।

ईला—(मुस्कराकर उसकी ओर देखती है) मैं ऐसा ही कर रही हूँ।

अरहार्ट—(उत्सुकता से) और फिर हम कल जी भर बातें करेंगे। मैं, आप और माता जी, क्यों मासी जी आपका इस विषय में क्या विचार है ?

श्रीमती वाकमन—(झट सोफे से उठ कर) मैं जानती हूँ अरहार्ट, तुम मुझे छोड़ कर जा रहे हो।

अरहार्ट—(घबरा कर) आपका इससे क्या तात्पर्य है ?

श्रीमती वाकमन—तुम हिंकलस के घर जा रहे हो।

अरहार्ट—(विवशता) अच्छा तो आप यह बात कहना चाहती थीं। (जरा संभलकर) आप यह तो नहीं चाहतीं कि

में यहाँ रह कर मासी ईला जी को आधी रात तक जगाए रखूँ। याद रहे माता जी, वह बीमार हैं।

श्रीमती वाकमन—तुम हिकलस के घर जा रहे हो, अरहार्ट ?

अरहार्ट—(अधीरता से) देखो माँ जी, मैं अपना वचन कैसे भंग कर सकता हूँ। मासी जी आपका इस विषय में क्या विचार है ?

ईला—मेरा विचार है कि जो तुम्हारी इच्छा हो उसे करो।

श्रीमती बाकमन—(धमकी देकर) तुम मेरे पुत्र को मुझ से छीनना चाहती हो।

ईला—(उठकर) हाँ, यदि मैं ऐसा कर सकूँ।

[ऊपर से गायन ध्वनि सुनाई देती है।]

अरहार्ट—(कांप कर) मुझे इससे घृणा है (आस-पास देखकर) मेरी टोपी कहाँ गई ? (ईला से) आप जानती हैं कि वह कौन सा स्वर बजा रही है।

ईला—नहीं ! क्या है ?

अरहार्ट—यह मृत्यु नाच है। आप इसे नहीं पहचानतीं ?

ईला—(शोकमय मुस्कान के साथ) अरहार्ट, अभी नहीं।

अरहार्ट—(श्रीमती बाकमन से) माँ मैं आप से निवेदन करता हूँ कि मुझे जाने दो।

श्रीमती बाकमन—(उसकी ओर कठोरता से देखकर) अपनी माँ से दूर। तो तुम यह करना चाहते हो।

अरहार्ट—मैं फिर लौट कर आपके पास आ जाऊँगा। संभव है कल तक।

श्रीमती वाकमन—(भावमय मुख से) तुम मुझे छोड़ कर जाना चाहते हो। उन अज्ञात लोगों के पास। मैं तो उनके विषय में विचार भी नहीं कर सकती।

अरहार्ट—वहाँ चमकती हुई रोशनी है, युवा लोगों के प्रसन्न मुख हैं, और राग रँग है।

श्रीमतो वाकमन—(ऊपर संकेत करके) इस स्थान पर भी गाना बजाना है, अरहार्ट !

अरहार्ट—इस गाने बजाने के कारण ही मैं इस घर से भागता हूँ।

ईला—क्या तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे पिता, यह गाना सुन कर अपने दुःख को भूल जाएँ ?

अरहार्ट—मैं चाहता हूँ कि वह प्रसन्न रह सकें, परन्तु मैं यह गाना नहीं सुनना चाहता।

श्रीमती वाकमन—(उसकी ओर गम्भीरता पूर्वक देखकर)—अरहार्ट, मेरे पुत्र, बलवान बनो। यह मत भूलो कि तुमने एक मिशन पूरा करना है।

अरहार्ट—माता जी, मुझ से ऐसी बातें न करो। मैं धर्म प्रचार के लिए भेजा हुआ मनुष्य नहीं हूँ। मासी जी और माता जी नमस्कार !

[विशाल भवन से होता हुआ बाहर चला जाता है।]

श्रीमती वाकमन—(कुछ देर चुप रहकर) ईला, अरहार्ट को अपनाने में तुम्हें बहुत कम समय लगा।

ईला—मैं चाहती हूँ कि जो आप कह रही हैं मैं उसे मान सकूँ।

श्रीमती वाकमन—परन्तु देखोगी कि तुम अधिक समय तक उसे अपने वश में न रख सकोगी।

ईला—मुझे इस बात के लिए किसी की आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं।

श्रीमती वाकमन—मैं, वह दूसरी स्त्री और कई और तुम्हारे रास्ते में बाधाएँ हैं।

ईला—वह दूसरी स्त्री चाहे उसे ले जाए, परन्तु मैं तुम्हें अरहार्ट को न लेने दूँगी।

श्रीमती वाकमन—(धीरे-धीरे सिर हिलाकर) यह मैं भी समझती हूँ। मैं भी उसे तुम्हें न लेने दूँगी चाहे वह दूसरी स्त्री उसे फाँस ले।

ईला—चाहे अन्त में उसे हानि ही हो ?

श्रीमती वाकमन—मुझे इस बात की परवाह नहीं।

ईला—(अपने वस्त्र भुजा पर रखकर) अपने जीवन में पहली बार किसी विषय में हम दोनों बहिनें सहमत हुई हैं। नमस्कार !

[जब वह हाल कमरे में से जाती है तो ऊपर वाली छत से गाने-बजाने की ध्वनि ऊँची हो जाती है।]

श्रीमती बाकमन—(क्षण भर के लिए चुप खड़ी रहती है, और फिर अपने आपसे बातें करती है) बीमार भेड़िया फिर कराह रहा है। (कुछ समय के पश्चात् वह फ़र्श पर लेट जाती है, और धीरे-धीरे बोलती है) अरहार्ट ! अरहार्ट ! मेरी ओर अपने कर्त्तव्य का पालन करो। घर लौट आओ और अपनी माँ की सहायता करो। मुझ से इस प्रकार का जीवन सहन नहीं किया जा सकता।

दूसरा अंक

[रेन्थिम भवन की दूसरी मंजिल। दीवारों पर जो परदे हैं उन पर शिकार के चित्र बने हुए हैं। भेड़ें चराने वालों और उन स्त्रियों के चित्र हैं, जिनका रंग फीका पड़ा हुआ है। दरवाजे के बाईं ओर एक पयानो रखा है। दाईं दीवार के मध्य में एक बड़ा लिखने का मेज है, जिस पर कई पुस्तकें और काग़ज हैं। इस से आगे एक सोफ़ा है, और उसके आगे एक मेज और कुर्सियां हैं। सब चीजें पुराने ढंग की हैं। दोनों ओर लैम्प जल रहे हैं।

जानगेब्रियल बाकमन हाथ पीछे करके पयानो के पास खड़ा है, और फरीडा का गायन सुन रहा है जो मृत्युंजय नाच की स्वर बजा रही है।

बाकमन औसत कद का आदमी है। वह हृष्टपुष्ट है और उसकी आयु साठ वर्ष के लगभग है। उसकी सूरत बहुत अच्छी है और उसकी आकृति सुन्दर है उसके बाल सफेद और घुंघराले हैं। उसने दाढ़ी रखी हुई है। उसने काले रंग का कोट और सफेद नेकटाई पहिनी हुई है।

फरीडा की आयु पन्द्रह वर्ष है, उसका रंग पीला है। उसने हलके रंग के सस्ते से कपड़े पहिन रखे हैं।]

वाकमन—क्या तुम अनुमान लगा सकती हो कि यह गायन ध्वनि मैंने पहिले कहाँ सुनी थी ?

फरीडा—नहीं श्रीबाकमन।

बाकमन—मैं खान के भीतर था, जब मैंने पहिले इसे सुना।

फरीडा—(**बिना समझे**) सचमुच खान के अन्दर !

बाकमन—मेरे पिता जी खान में काम करते थे, और वह कभी-कभी मुझे उसके भीतर ले जाया करते थे। धातु वहाँ गाते हैं।

फरीडा—सचमुच ?

वाकमन—(**सिर हिलाकर**) जब हथौड़े मारकर धातु को रात के समय खान से अलग किया जाता है, तो एक विचित्र सी ध्वनि सुनाई देती है।

फरीडा—धातु ऐसा क्यों करते हैं ?

बाकमन—यह दिन के उजाले में आकर मनुष्य जाति की सेवा करना चाहते हैं (**वह बरामदे के इधर-उधर फिरता रहता है**)

फरीडा—(**अपनी घड़ी को देखकर उठ खड़ी होती है**) श्री वाकमन, मुझे क्षमा करना, अब मैं जाती हूँ।

बाकमन—(**उसके सामने ठहर कर**) क्या इतनी जल्दी जाने को तैयार हो गई ?

फरीडा—हाँ मुझे अवश्य जाना है। आज शाम को मुझे आवश्यक काम है।

वाकमन—किसी पार्टी पर जाना है?

फरीडा—हाँ जी।

वाकमन—और तुमने वहाँ पयानो बजाना है?

फरीडा—(**अधर चबा कर**) नहीं, नाच के साथ पयानो बजाना है।

वाकमन—केवल नाच के साथ?

फरीडा—हाँ, रात के खाने के पश्चात् नाच है।

वाकमन—क्या इस प्रकार की सभा में नाच के साथ पयानो बजाना तुम्हें अच्छा लगता है?

फरीडा—हाँ जब कोई मुझे बुला भेजे। इस प्रकार मैं कुछ धन कमा सकती हूँ।

वाकमन—क्या जब ऐसी सभा में तुम पयानो बजाती हो तो तुम्हारे मन में पैसे का ही विचार रहता है?

फरीडा—नहीं, मैं सदा यही सोचती रहती हूँ कि यह मुझ पर कितनी कठोरता है कि मैं दूसरे नाचने वालों के साथ नाच नहीं सकती।

वाकमन—(**सिर हिला कर**) मैं यही जानना चाहता था (**कमरे में इधर-उधर फिर कर**) यह तुम्हारा दुर्भाग्य है कि तुम नाच में भाग नहीं ले सकतीं। (**ठहर कर**) परन्तु एक बात है जिससे तुम्हें धीरज रखना चाहिए।

फरीडा—श्री वाकमन वह क्या है?

वाकमन—यह ज्ञान कि इन नाचने वालों से तुम्हें दस गुना अधिक संगीत आता है।

फरीडा—(लज्जित मुस्कान के साथ) मुझे इस बात का पूरा निश्चय नहीं।

वाकमन—(उंगली उठाकर) तुम्हें अपने आप पर भरोसा न करने का पागलपन नहीं करना चाहिये।

फरीडा—परन्तु और कोई इस बात को नहीं जानता।

वाकमन—यदि तुम्हें इस बात का ज्ञान है तो यह काफ़ी है। आज तुम कहाँ पयानो बजा रही हो ?

फरीडा—श्री हिंकल के घर।

वाकमन—(जल्दी से उसकी ओर देखकर) क्या कहा, हिंकल के घर ?

फरीडा—जी हाँ।

वाकमन—(कटु मुस्कान के साथ) क्या वह आज कल लोगों को खाने पर बुलाता है ? कोई उसके घर जाने को भी तैयार है ?

फरीडा—श्रीमती विल्टन कह रही थीं कि बहुत से लोगों का उनके घर आना जाना है।

वाकमन—(ज़ोर से) परन्तु किस प्रकार के लोग ? क्या तुम मुझे यह बता सकती हो ?

फरीडा—(कुछ घबरा कर) मुझे सचमुच यह पता नहीं। परन्तु मैं यह जानती हूँ कि अरहार्ट वाकमन भी वहाँ आज जा रहा है।

वाकमन—(अचम्भे के साथ) अरहार्ट ! मेरा पुत्र ?

फरीडा—हाँ वह वहाँ जा रहा है।

वाकमन—तुम्हें यह कैसे पता है ?

फरीडा—एक घण्टा पहिले उसने स्वयं मुझे बताया था।

वाकमन—क्या वह आज घर आया हुआ है ?

फरीडा—हाँ, आज दोपहर के पश्चात् वह सारा दिन श्रीमती विल्टन के घर रहा है।

वाकमन—क्या वह इस घर में भी आया था ? मेरा अभिप्राय है कि क्या वह निचली मंज़ल मकान में रहने वाले किसी को मिला था ?

फरीडा—हाँ, वह श्रीमती वाकमन को मिलने आया था।

वाकमन—(**कठोर भाव से**) आह ! मुझे भी इस बात का पता होता !

फरीडा—एक स्त्री भी उसे मिलने आई हुई थी जिसको मैं नहीं जानती।

वाकमन—सचमुच ? लोग कभी-कभी श्रीमती वाकमन को मिलने आते हैं ?

फरीडा—यदि अरहार्ट को आज शाम को मिलूँ तो उसे कहूँ कि वह आपको भी मिले ?

वाकमन—(**कठोरता से**) तुम कदाचित ऐसा न करना ! मैं इस बात के विरुद्ध हूँ। जो मनुष्य मुझे मिलना चाहते हैं, वे स्वयं यहाँ आएँ। मैं किसी को नहीं बुलाता।

फरीडा—बहुत अच्छा, मैं उसे नहीं कहूँगी। श्री वाकमन नमस्कार !

वाकमन—(**ऊपर नीचे फिर कर**) नमस्कार !

फरीडा—यदि मैं पिछली सीढ़ियों से उतर जाऊँ तो आप इसे बुरा तो नहीं मनाएँगे ? यह रास्ता ज़रा छोटा है।

वाकमन—जिस रास्ते से तुम्हारी इच्छा हो चली जाओ।

[फरीडा बाहर चली जाती है।]

वाकमन—(सोच में डूबा हुआ, पियानो के पास जाकर उसे बन्द करने का विचार करता है, किन्तु फिर ऐसा नहीं करता। खाली कमरे को देखकर फिर इधर-उधर टहलना आरम्भ कर देता है। फिर मेज़ के समीप जाकर एक शीशा लेकर अपनी नेकटाई ठीक करता है। इतने में कोई दरवाज़ा खटखटाता है। इस आवाज को सुनकर भी वह चुप रहता है। इतने में कोई दरवाजा और जोर से खटखटाता है। इस पर वह कहता है कि अन्दर आ जाओ।)

[फोलडल धीरे से कमरे में प्रविष्ट होता है। वह दुर्बल सा व्यक्ति है, और उसके बाल सफेद हैं।]

वाकमन—(उसकी ओर देखकर) अच्छा आप हैं ?

फोलडल—श्रीमान जी, नमस्कार !

वाकमन—(निष्ठुरता से) मुझे यह कहना पड़ता है कि आप मुझे बहुत देर करके मिलने आए हैं।

फोलडल—आप जानते हैं कि मेरा घर यहाँ से दूर है, और मुझे पैदल चलकर आना पड़ता है।

वाकमन—बस आप के घर के पास से गुज़रती है तो फिर आप सदा पैदल क्यूँ आते हैं ?

फोलडल—पैदल चलना लाभदायक है, और दो आने भी बच जाते हैं। क्या फरीडा यहाँ पियानो बजाने आई थी ?

वाकमन—अभी वह यहाँ से गई है, क्या वह आपको रास्ते में नहीं मिली ?

फोलडल—मैं उसे देर से नहीं मिला, क्योंकि वह आज कल विल्टन के पास रहती है ।

वाकमन—(स्वयं सोफे पर बैठकर उसे कुर्सी पर बैठ जाने को कहता है) बैठ जाओ ।

फोलडल—(कुर्सी पर बैठकर) धन्यवाद ! क्या कहूँ जब से लड़की घर से चली गई है, मैं बड़ा अकेला सा हो गया हूँ ।

वाकमन—अजी जाने दो । अभी तो तुम्हारे और भी बच्चे हैं ।

फोलडल—परमात्मा की दया से मेरे पाँच बच्चे हैं किन्तु केवल फरीडा ही मुझे समझती है । (सिर हिलाकर, शोकातुरता से) बाकी तो मुझे ज़रा भी नहीं समझते ।

वाकमन—(उदासीन होकर मेज पर खट-खट करता है) वास्तव में यही बात है । हम जैसे साधारण व्यक्तियों पर यह शाप है, कि साधारण लोग हमें समझ नहीं सकते ।

फोलडल—(परित्याग के साथ) यदि न समझने की ही बात हो तो मैं इसे सहन कर सकता हूँ, (उसका गला भर आता है) किन्तु वास्तविक दशा तो इससे भी खराब है ।

वाकमन—इस से अधिक और कोई कष्टदायक बात नहीं हो सकती ।

फोलडल—हाँ, हो सकती है । घर से आने से पहिले वहाँ कुछ झगड़ा सा हो गया था ।

वाकमन—सच ? किस विषय पर ?

फोलडल—(**मन की बात कह कर**) मेरे घर वाले मुझ से घृणा करते हैं ।

वाकमन—(**क्रोध पूर्वक**) घृणा—!

फोलडल—(**अपनी आंखें पोंछकर**) मुझे इस बात का देर से पता है, किन्तु आज तो इसमें कोई सन्देह नहीं रहा ।

वाकमन—(**कुछ देर ठहर कर**) तुमने विवाह करते समय बुद्धिमत्ता से काम नहीं लिया ।

फोलडल—मैं और कुछ नहीं कर सकता था । और बात यह है कि ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है मनुष्य कोई न कोई साथी चाहता है । और उस समय मेरा सर्वनाश हो चुका था, और मेरी दशा बड़ी करुणाजनक थी ।

वाकमन—(**क्रोध से उछलकर**) क्या तुम यह मुझे सुनाकर मेरा तिरस्कार कर रहे हो ?

फोलडल—परमात्मा साक्षी है, मेरा यह अभिप्राय नहीं है । मुझे ग़लत मत समझो ।

बाकमन—यह बात स्पष्ट है कि तुम बैंक के टूट जाने के विषय की ओर संकेत कर रहे हो ।

फोलडल—(**उसे मनाने का प्रयत्न करके**) परन्तु उस बात में तुम्हारा क्या दोष था ? मेरा ही भाग्य फूट गया था ।

बाकमन—(**बड़बड़ाता हुआ बैठ कर**) चलो यह अच्छी बात है ।

फोलडल—और आप यह न समझें कि मैं अपनी पत्नी के विषय में कोई शिकायत कर रहा हूँ। यह ठीक है कि वह पढ़ी लिखी नहीं। किन्तु वह बहुत भली है। इस बात में बच्चों का दोष है।

वाकमन—मेरा भी यही विचार है।

फोलडल—बच्चे अधिक शालीन हैं, इसलिए वे अच्छी प्रकार जीवन व्यतीत करना चाहते हैं।

वाकमन—(**सहानुभूति के साथ उसकी ओर देख कर**) तुम्हारे बच्चे तुम से घृणा करते हैं ?

फोलडल—(**कंधे सिकोड़ कर**) इसमें कोई संदेह नहीं कि मैं अपने जीवन में सफल नहीं रहा।

वाकमन—(**उसके समीप आकर और अपना हाथ उसकी भुजा पर रखकर**) क्या वे जानते हैं कि युवावस्था में तुमने एक दुःखान्त नाटक भी लिखा है ?

फोलडल—हाँ, वे यह जानते हैं। परन्तु वे इस बात से अधिक प्रभावित नहीं।

वाकमन—तब उनको इन बातों की समझ नहीं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम्हारा नाटक बहुत अच्छा है।

फोलडल—(**प्रसन्नचित्त होकर**) आपकी प्रशंसा के लिए धन्यवाद ! यदि इसे कोई छापदे तो मुझे कितना आनन्द हो। (**अपना थैला खोलता है**) देखो मैंने इसमें कुछ परिवर्तन किया है।

वाकमन—क्या यह पुस्तक तुम्हारे पास है ?

फोलडल—हाँ मैं इसे साथ लाया हूँ। बहुत देर से मैंने इसे आपको पढ़कर नहीं सुनाया। मैंने सोचा कि एक दो अंक में आपको पढ़कर सुनाऊँगा।

वाकमन—(खड़ा होकर) नहीं, नहीं, फिर किसी समय सुनेंगे।

फोलडल—जैसे आपकी इच्छा।

[**बाकमन कमरे में इधर-उधर घूमता है, और फोलडल पाण्डु-लिपि को थैले में फिर डाल देता है।**]

वाकमन–(ठहर कर) यह तुमने सत्य कहा है कि तुम्हारा जीवन असफल रहा है। परन्तु मैं तुमको वचन देता हूँ कि जब मेरी दशा ठीक होने का समय आया—

फोलडल—(उठकर) धन्यवाद! धन्यवाद!!

वाकमन—कृपया बैठ जाओ जब मेरी दशा ठीक होने का समय आया—जब उन लोगों को यह विश्वास हो गया कि मेरे बिना उनको सफलता नहीं मिल सकती—जब वे यहाँ आकर मेरे पाँव पड़ेंगे और मुझसे प्रार्थना करेंगे कि बेंक की बागडोर सम्भालो—! जो नया बेंक उन्होंने बनाया है और जिसे वे भली प्रकार चला नहीं सकते—मैं इसी स्थान पर खड़ा होकर उन से बातें करूँगा—और इस बात का सब लोगों को पता लग जाएगा कि बाकमन किन शर्तों पर उनके लिए काम करने को तैयार है। (**झट बोलना बन्द करके**) तुम मेरी ओर इस प्रकार देख रहे हो, जैसे कि मेरी बातों पर तुम्हें विश्वास नहीं। शायद तुम इस

बात को नहीं मानते कि वे मेरे पास आएँगे ? वे अवश्य किसी न किसी दिन मेरे पास आएँगे । क्या तुम इस बात को नहीं मानते ?

फोलडल—परमात्मा साक्षी है, कि मैं इस बात को मानता हूँ ।

वाकमन—(**फिर सोफे पर बैठकर**) मुझे तो इस बात का पूरा विश्वास है । वे निस्सन्देह आकर ही रहेंगे । यदि मुझे इस बात का विश्वास न होता तो मैंने आत्महत्या करली होती ।

फोलडल—(**घबरा कर**) परमेश्वर के लिए यह विचार अपने मन से निकाल दो ।

वाकमन—(**अत्यन्त प्रसन्नता से**) पर वे अवश्य आयेंगे । वे किसी समय भी आ सकते हैं । और देखो मैं अपने आपको उन से मिलने के लिए सदा तैयार रखता हूँ ।

फोलडल—(**आह भर कर**) उनको बहुत जल्दी आजाना चाहिए ।

वाकमन—(**अधीरता से**) हाँ, समय बीत रहा है (**उसकी ओर देखकर**) तुम्हें पता है कि मेरे मन में क्या-क्या विचार आते हैं ?

फोलडल—क्या ?

वाकमन—मैं अपने आप को उस नैपोलियन की तरह समझता हूँ जो कि पहली लड़ाई में ही पंगु हो गया हो ।

फोलडल—(अपने थैले पर हाथ रखकर) मेरे मन में भी ऐसे ही विचार हैं।

वाकमन—किन्तु तुमने तो बहुत छोटी लड़ाई लड़ी है।

फोलडल—(शांतिपूर्वक) मेरी कविता का छोटा सा संसार मुझे बहुत प्रिय है।

वाकमन—(ज़ोर से) किन्तु मेरे विषय में सोचो—मैं लाखों रुपये कमा सकता था। कई खानों पर मेरा अधिकार हो सकता था। सारे संसार के व्यापार में मैं विख्यात हो सकता था।

फोलडल—हाँ हाँ, मैं यह सब कुछ मानता हूँ।

वाकमन—(हाथ में हाथ डालकर) और अब एक घायल बाज की दशा में मुझे यहाँ बैठना पड़ा है। मेरे देखते देखते लोग जीवन की दौड़ में आगे बढ़ रहे हैं, और मैं यहाँ बैठा देख रहा हूँ।

फोलडल—मेरा भी ऐसा ही भाग्य है।

वाकमन—(उसकी ओर ध्यान न करके) और देखो मैं अपने लक्ष्य के कितना समीप था! यदि लोग जल्दी न करते तो सब कुछ ठीक हो जाता, और किसी का एक पैसा भी नष्ट न होता।

फोलडल—हाँ आप सफलता के बहुत समीप थे।

वाकमन—(तीव्र रोष दबा कर) किन्तु लोगों ने मुझे धोखा दिया, और वह भी घोर संकट के समय। (उसकी ओर देखकर) तुम जानते हो मनुष्य कौन सा सब से बड़ा पाप कर सकता है?

फोलडल—नहीं, मैं नहीं जानता—वह क्या है ?

बाकमन—वह, हत्या, चोरी, या झूठ बोलना नहीं। ये सब बातें लोग उनके विरुद्ध करते हैं, जिनके प्रति उनका कोई मित्र भाव नहीं होता या जिनसे वे घृणा करते हैं।

फोलडल—बाकमन—सबसे बड़ा पाप क्या है ?

बाकमन—(ज़ोर से) किसी ऐसे मित्र को धोखा देना जो तुम पर विश्वास करता हो, सबसे बड़ा पाप है।

फोलडल—(कुछ संदेह पूर्वक) हाँ, किन्तु तुम जानते हो…

बाकमन—(उत्तेजित होकर) तुम क्या कहने लगे हो, वह मैं तुम्हारे मुख से भाँप सकता हूँ। किन्तु यह कहना बेकार है। जिन लोगों का धन बैंक में था, वह उन सबको लौटा दिया जाता। मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि सबसे बड़ा अपराध जो मनुष्य कर सकता है वह यह है कि अपने मित्रों के पत्रों का बुरा उपयोग करे। जो मनुष्य ऐसा कर सकता है, उसके शरीर में नीचता का विष भरा हुआ है।

फोलडल—मैं समझ गया हूँ कि आप का संकेत किस की ओर है।

बाकमन—मैं ने अपने मन के सब भेद उसे बताए हुए थे। और जब समय आया तो उसने उन सब अस्त्रों का उपयोग किया जो कि मैं ने ही उसके हाथ में दिए हुए थे।

फोलडल—मेरी समझ में नहीं आया कि उसने—उस समय वैसे तो हर प्रकार की चर्चा थी।

बाकमन—क्या चर्चा थी ? मुझे कु . पता नहीं कि लोग

क्या वातें करते थे। मैं तो उन दिनों किसी से मिलता ही नहीं था।

फोलडल—लोग कहते थे कि आपको मन्त्रिमण्डल में लिया जा रहा है।

वाकमन—मुझे निमन्त्रण तो मिला था, परन्तु मैंने मना कर दिया था।

फोलडल—इसीलिए वहाँ तो आप उसके रास्ते में वाधा नहीं थे।

वाकमन—उसने इस कारण मुझे धोखा नहीं दिया।

फोलडल—फिर मेरी समझ में नहीं आता।

वाकमन—मैं तुम्हें वता सकता हूँ।

फोलडल—अच्छा!

वाकमन—यह सारा झगड़ा एक स्त्री के कारण हुआ।

फोलडल—स्त्री का इस बात में क्या हाथ था?

वाकमन—चलो इन पुरानी रामकहानियों को छोड़ो। न उसे मन्त्रिमण्डल में स्थान मिला, न मुझे।

फोलडल—किन्तु उसे संसार में वड़ी सफलता हुई।

वाकमन—और मैं गढ़े में गिर गया।

फोलडल—यह बड़ी दुर्घटना थी।

वाकमन—(**सिर हिलाकर**) जब मैं सोचता हूँ तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम भी मेरी तरह अभागे हो।

फोलडल—यह बात ठीक है।

वाकमन—(**चुपके से हँसकर**) यदि इस बात को दूसरी दृष्टि से देखो तो यह सुखान्तक नाटक बन जाता है।

फोलाडल—सुखांतक नाटक ? तुम्हारी जीवन कहानी ?

वाकमन—कुछ नई घटनाओं को देखकर मेरा यही अनुमान है। मुझे बताने दो.........

फोलडल—क्या ?

वाकमन—तुम कह रहे थे कि जब तुम भीतर आए तो तुमने फरीडा को नहीं देखा।

फोलडल—नहीं !

वाकमन—इस समय जब हम दोनों यहाँ बैठे हुए हैं, वह उस मनुष्य के अतिथियों के लिए पियानो पर नाच की धुनें बजा रही है, जिसने मुझे धोखा देकर मेरा सर्वनाश किया था।

फोलडल—मुझे इस बात का कुछ पता न था।

वाकमन—यहाँ से वह सीधी उसके घर गई है।

फोलडल—(झेंपकर) देखो न वह अभी अनजान बालक ही तो है।

वाकमन—क्या तुम अनुमान लगा सकते हो कि वहाँ कौन कौन से अतिथि हैं ?

फोलडल—नहीं।

वाकमन—उन सब में मेरा पुत्र भी है।

फोलडल—क्या कहा ?

वाकमन—तुम्हारा इस विषय में क्या विचार है ? मेरा बेटा भी आज सायंकाल वहाँ नाच में भाग ले रहा है। क्या मैं इसे सुखांतक नाटक नहीं कह सकता ?

फोलडल—मेरा विचार है कि आपका भेद उस से छिपा हुआ है।

वाकमन—उसको सब कुछ पता है।

फोलडल—शायद उसे यह पता नहीं कि उस मनुष्य का आपके सर्वनाश में क्या हाथ है ?

वाकमन—(उदासीनता से मेज़ पर हाथ मार कर) उससे कोई भी बात छिपी हुई नहीं है।

फोलडल—तो फिर वह उस घर में अतिथि बनकर कैसे जा सकता है ?

वाकमन—(सिर हिला कर) मेरा बेटा शायद सारी बात को भिन्न दृष्टिकोण से देखता है। मैं शपथ लेकर कह सकता हूँ कि वह मेरे शत्रु के साथ है। इस में संदेह नहीं कि वह भी उन की तरह यह समझता है कि हिंकल ने मेरे विरुद्ध सब बातें बताकर अपने धर्म का पालन किया था।

फोलडल--परन्तु मेरे प्यारे मित्र, ये सब बातें उसे किसने सिखाईं ?

वाकमन—किसने ? यह मत भूल जाओ कि उसको किसने पाला पोसा। पहिले छः सात साल उस की मासी ने, और उसके बाद उसकी माँ ने !

फोलडल—मेरा विचार है कि तुम उनके साथ अन्याय कर रहे हो।

वाकमन—(भड़क कर) मैं किसी से अन्याय नहीं करता। उन दोनों ने मेरे पुत्र के मन में मेरे विरुद्ध विष भरा दिया है।

फोलडल—(शान्ति पूर्वक) हाँ हाँ, उन्होंने ऐसा किया है।

वाकमन—(क्रोध पूर्वक) ये स्त्रियाँ ! ये पुरुष के

जीवन को नष्ट कर देती हैं। हमारा भाग्य बिगाड़ देती हैं, और उन्नति के मार्ग में भी बाधा बनती हैं।

फोलडल—सब स्त्रियाँ ऐसा नहीं करतीं।

वाकमन—क्या कहा ? मुझे किसी स्त्री का नाम बता सकते हो जिसने कोई भला किया हो ?

फोलडल—नहीं, यही तो कठिन काम है। जिन थोड़ी सी स्त्रियों को मैं जानता हूँ वे सब निकम्मी हैं।

वाकमन—(**घृणा से नाक भौं चढ़ा कर**) ऐसी स्त्रियों के होने से क्या लाभ जब तुम उन्हें नहीं जानते।

फोलडल—(**उत्साह पूर्वक**) श्री वाकमन, मेरी बात मानो कि यह विचार निरर्थक नहीं है। यह कितना अच्छा विचार है कि संसार में कहीं न कहीं आदर्श नारी है।

वाकमन—मेरे साथ यह कवियों वाली बकवास मत करो।

फोलडल–(**दुःखित मन से**) मेरे धार्मिक विश्वास का उपहास न करो।

वाकमन—(**निष्ठुरता से**) इसी कारण तुम संसार में आगे नहीं बढ़ सके। अब भी यदि ऐसे विचार तुम मन से निकाल दो, तो सांसारिक उन्नति में मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।

फोलडल—(**क्रोध से**) आप यह नहीं कर सकते।

वाकमन–मैं फिर शक्तिशाली बनकर ऐसा कर सकता हूँ।

फोलडल—इसको बड़ा समय लगेगा।

वाकमन—(जोर से) कभी तुम यह सोचते हो कि वह दिन कभी नहीं आएगा ? बताओ।

फोलडल—मुझे समझ में नहीं आता कि क्या उत्तर दूँ।

वाकमन—(उठकर दरवाजे की ओर संकेत करके) तो फिर तुम मेरे लिए निकम्मे आदमी हो।

फोलडल—(चौंक कर)—व्यर्थ मनुष्य—।

वाकमन—क्योंकि तुम समझते हो कि मेरा भाग्य कभी नहीं पलटेगा।

फोलडल—मैं यह कैसे मान सकता हूँ ! मेरी विचार-शक्ति मुझे यह बात मानने नहीं देती। इस में कई कानूनी बाधाएँ हैं।

वाकमन—सब कुछ कह दो।

फोलडल—यह ठीक है कि मैंने परीक्षा पास नहीं की, किन्तु मुझे यह बात समझने के लिए काफ़ी कानून आता है।

वाकमन—(उतावलेपन से) क्या तुम्हारा विचार है कि मेरी दशा सुधरनी असम्भव है ?

फोलडल—ऐसा पहिले कभी नहीं हुआ।

वाकमन—असाधारण व्यक्तियों पर पहिले का न्याय लागू नहीं होता।

फोलडल—कानून की नज़र में असाधारण और साधारण व्यक्ति में कोई भेद नहीं।

वाकमन—(निष्ठुरता से) तुम्हें कवि समझना मेरी भूल थी।

फोलडल—(हाथ में हाथ डाल कर) यह बात आप अपने दिल से कह रहे हैं ?

वाकमन—(इस विषय पर बात बन्द करके) हम दोनों केवल एक दूसरे का समय नष्ट कर रहे हैं। तुम यहाँ आना बन्द कर दो।

फोलडल—तो फिर आप क्या चाहते हैं कि मैं यहाँ से चला जाऊँ ?

वाकमन—(उसकी ओर बिना देखे) तुम मेरे किसी काम नहीं आ सकते।

फोलडल—(अपना थैला उठा कर) नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं कह सकता।

वाकमन—यहाँ सदा तुम मेरे साथ झूठ बोलते रहे हो।

फोलडल—(उससे हाथ मिला कर) मैंने कभी झूठ नहीं बोला।

वाकमन—क्या तुम यहाँ बैठकर मुझे आशा की झलक नहीं दिखाते रहे ? क्या वह सब झूठ था ?

फोलडल—यह उस समय तक झूठ नहीं था, जब तक तुम्हारा मेरे व्यवसाय में विश्वास था। जब तुम मुझ पर विश्वास करते थे, मैं आप पर विश्वास करता था।

वाकमन—इसका तात्पर्य है कि हम एक दूसरे को धोखा देते रहे हैं। और संभवत: अपने आप को भी धोखा देते रहे हैं।

फोलडल—क्या मित्रता का यही अर्थ नहीं ?

वाकमन—(कटु मुस्कान से) हाँ, तुम ठीक कहते हो।

मित्रता धोखे का ही दूसरा नाम है। मुझे इस बात का पहिले भी अनुभव हो चुका है।

फोलडल—आपने मुझे खुल कर कह दिया कि कविता मेरा काम नहीं है।

बाकमन—(**कोमलता से**) तुम जानते हो मुझे इन बातों का अधिक ज्ञान नहीं है।

फोलडल—कदाचित आप इतने अज्ञानी नहीं जितना कि अपने आप को समझते हो।

बाकमन—मैं ?

फोलडल—(**कोमलता से**) हाँ, आप। मुझे भी कभी-कभी संशय हो जाता है कि एक धोखे के कारण मैंने अपने जीवन का सर्वनाश कर दिया।

बाकमन —यदि तुम्हें अपने आप पर विश्वास नहीं तो सचमुच तुम नीचे गिर रहे हो।

फोलडल—इसलिए मुझे यहाँ आकर संतोष होता था, क्योंकि आपको मुझ पर विश्वास था (**अपनी टोपी पकड़ कर**) किन्तु अब आप पराए बन गए।

बाकमन—और तुम मेरे लिए।

फोलडल—नमस्कार !

बाकमन—नमस्कार !

[फोलडल बाहर चला जाता है—बाकमन कुछ देर खड़ा होकर बन्द दरवाजे की ओर देखता रहता है। ऐसा प्रतीत होता है कि फोलडल को वापस बुलाना चाहता है। फिर वह इधर-उधर घूमता है। वह बत्ती

बुझा देता है। कमरे में अंधेरा हो जाता है। कुछ समय के पश्चात् कोई दरवाज़ा खटखटाता है।]

वाकमन—(ऊँची आवाज से) कौन दरवाज़ा खटखटा रहा है ?

[बिना उत्तर दिये फिर कोई दरवाजा खटखटाता है।]

वाकमन—कौन है ? अन्दर आजाओ।

[हाथ में जलती मोमबत्ती लिए हुए ईला दिखाई देती है। उसने काले वस्त्र पहने हुए हैं, और उसके कंधों पर एक शाल है।]

वाकमन—(उसकी ओर देखकर) तुम कौन हो ? यहाँ क्या करने आई हो ?

[मोमबत्ती पियानो पर रखकर वह खड़ी हो जाती है।]

ईला—(दरवाजा बन्द करके आगे जाती है) श्री वाकमन, मैं ईला हूँ।

वाकमन—(स्तम्भित होकर) क्या यह ईला है ?

ईला—हाँ, मैं आपकी ईला हूँ। कई वर्ष हो गए कि आप मुझे इस प्रकार बुलाया करते थे।

वाकमन—(पहली प्रकार) अच्छा ईला तुम हो। अब मैं तुम्हें देख सकता हूँ।

ईला—क्या आप मुझे पहचानते हो ?

वाकमन—हाँ, मैं पहचना गया।

ईला—समय ने मुझ पर बहुत प्रभाव डाला है। अब तो मेरे जीवन की शरद ऋतु है। आपका क्या विचार है ?

वाकमन—(कृत्रिम ध्वनि से) आप में वड़ा परिवर्तन हो गया है।

ईला—अब मेरे बाल सफेद हो रहे हैं।

वाकमन—अब आपने अपने बाल और प्रकार से सँवारे हुए हैं।

ईला–प्रत्येक काम अवस्था के अनुसार ही करना पड़ता है।

वाकमन—(**विषय बदल कर**) मुझे यह विचार नहीं था कि आप यहाँ आई हुई हैं।

ईला—(**उदासीन मुस्कान से**) मैं अभी आई हूँ।

वाकमन—आप सरदियों में इतनी दूर क्यों आई हैं।

ईला—मैं अभी आपको बताती हूँ।

वाकमन—क्या आप मुझे मिलने आई हैं ?

ईला—आपको भी, और सबको भी। किन्तु यदि मैं आप को अपना ठीक अभिप्राय बताऊँ तो मुझे यह कहानी आरंभ से सुनानी पड़ेगी।

वाकमन—आप थकी हुई दिखाई देती हैं।

ईला—हाँ, यह ठीक है।

वाकमन—आप सोफे पर बैठ जाएँ।

ईला—धन्यवाद, मुझे विश्राम की आवश्यकता है।

[**दाईं ओर जाकर वह सोफे पर बैठ जाती है। बाकमन मेज के पास खड़ा हो जाता है। कुछ समय के लिए दोनों चुप रहते हैं।**]

ईला—हमें मिले कितना अधिक समय हो चुका है !

वाकमन—(**उदासीनता से**) कई वर्ष बीत गए। और कई भयंकर दुर्घटनाएँ हो चुकीं।

ईला—एक जीवन व्यतीत हो गया—अथवा एक जीवन नष्ट हो गया।

वाकमन—(उसकी ओर देखकर) नष्ट हो गया ?

ईला—हाँ, हम दोनों का जीवन नष्ट हो गया।

वाकमन—(धीमे स्वर में) मैं अभी अपने जीवन को असफल नहीं समझता।

ईला—मेरे जीवन के विषय में आपका क्या विचार है ?

वाकमन—इसमें तुम्हारी अपनी भूल है।

ईला—(चौंककर) क्या आप यह कह सकते हैं ?

वाकमन—आप मेरे बिना भी सुखी रह सकती थीं।

ईला—क्या आप यह बात सच्चे दिल से कह सकते हैं ?

वाकमन—यदि आपने इस बात का निर्णय कर लिया होता।

ईला—(कटु भाव से) हाँ मैं जानती हूँ कि एक दूसरा मनुष्य मेरे साथ विवाह करने को तैयार था।

वाकमन—किन्तु आपने ठुकरा दिया।

ईला—हाँ मैंने ऐसा किया।

वाकमन—आपने कई बार ऐसा किया।

ईला—(तिरस्कार पूर्वक) आप समझते हैं कि मैंने सुख और आनन्द को ठुकरा दिया।

वाकमन—यह संभव था कि आप उसके साथ आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करतीं। और फिर मेरा भी बचाव हो जाता।

ईला—आपका ?

वाकमन—आप मुझे बचातीं, ईला !

ईला—किस प्रकार ?

वाकमन—उसका विचार था कि आप मेरे कारण उसे अस्वीकार कर रही हैं। इसलिए उसने मेरे साथ बदला लिया। उसके पास मेरे पत्र थे जिनमें मैंने उसे कई बातें खुल कर लिखी हुई थीं, उनका उपयोग करके उसने मेरा सर्वनाश कर दिया—इसलिए मेरे सर्वनाश में आपका हाथ है।

ईला—क्या सचमुच ? यदि हम सारी बात पर अच्छी प्रकार विचार करें, तो ऐसा प्रतीत होता है कि मुझे आपकी हानि को पूर्ति करनी चाहिए।

वाकमन—यह इस पर निर्भर है कि हम किसी बात को किस दृष्टि कोण से देखते हैं। मैं अच्छी प्रकार जानता हूँ कि आपने हमारे लिए क्या किया है। आपने हमारा घर नीलामी में खरीदा; और इसे मुझे और अपनी बहिन को रहने के लिए दे दिया। आप अरहार्ट को अपने घर ले गईं और हर प्रकार से उसकी देखभाल की।

ईला—जितनी देर मुझे यह करने दिया गया—

वाकमन—आपका संकेत अपनी बहिन की ओर है। मैं घरेलू बातों में कभी दखल नहीं देता। जैसा कि मैं कह रहा था, मैं जानता हूँ कि आपने मेरे और अपनी बहिन के लिए क्या बलिदान दिया। परन्तु आप ऐसा कर सकती थीं,

ईला, परन्तु यह बात न भूलो कि ऐसा करने की शक्ति मैंने आप को दी थी।

ईला—(क्रोध पूर्वक) यह आपकी बहुत बड़ी भूल है। मैंने यह सब कुछ इसीलिए किया क्योंकि मेरे दिल में आपके लिए और अरहार्ट के लिए अथाह प्रेम है।

वाकमन—(बात काटकर) प्रिय ईला, इस विषय में भावों की चर्चा करना व्यर्थ है। मेरा अभिप्राय यह है कि आप यह दया इसलिए दिखा सकीं, क्योंकि मैंने आपको ऐसा करने की शक्ति दी।

ईला—(मंद मुस्कान से) अच्छा तो यह बात है।

वाकमन—(चमक कर) मैं ऐसा कह सकता हूँ। जब मुझे अपने जीवन की भयानक लड़ाई लड़नी पड़ी, उस समय मुझे सब संबंधियों को भी भूलना पड़ा। उस समय जो लाखों रुपये लोगों ने मेरे बैंक में रखे थे मैंने उनका प्रयोग किया—किन्तु मैंने आपका पैसा-पैसा चुका दिया। मैं तुम्हारे सारे धन को भी दबा सकता था, जैसा कि मैंने अन्य लोगों के साथ किया।

ईला—(शांतिपूर्वक) यह ठीक है।

वाकमन—यह सत्य है। इसलिए जब वह मुझे पकड़ कर ले गए, तो आपकी सब सिक्योरिटियाँ वैसी की वैसी पड़ी थीं, और वे बैंक के तहखाने में मिल गईं।

ईला—(उसकी ओर देखकर) मुझे यह अभी तक समझ नहीं आया कि आपने ऐसा क्यों किया ?

वाकमन—मैंने ऐसा क्यों किया ?

ईला—हाँ मुझे यह बताओ।

वाकमन—(**निष्ठुरता से**) संभवतः आप यह समझती हैं कि मैंने यह धन अपने लिए बचाकर रखा हुआ था ?

ईला—नहीं, नहीं मुझे विश्वास है कि उन दिनों आप ऐसा नहीं कर सकते थे।

वाकमन—कभी नहीं। मुझे विश्वास था कि अन्त में मेरी जीत होगी।

ईला—तो फिर आपने ऐसा ……?

वाकमन—(**कंधे सिकोड़ कर**) मुझे अपनी शपथ, ईला, बीस साल पहिले की बातें याद रखना सुगम कार्य नहीं। मुझे याद है कि मैं अपने मन में कई प्रकार की कल्पनायें किया करता था। मेरे मन में उस मनुष्य के विचार थे जो एक गुब्बारे में चढ़कर उड़ान के विषय में सोच रहा हो। रात के समय जाग कर मैं अपने गुब्बारे में हवा भरता रहता था, और सोचता था, कि इसमें उड़कर किसी निराले और भयानक देश में जाऊँगा।

ईला—(**मुस्कराकर**) आप को तो अपनी जीत के विषय में कोई संशय न था।

वाकमन—(**उतावलेपन से**) ईला, पुरुषों के विचार ऐसे ही होते हैं। उन्हें निश्चय और संदेह एक साथ ही होता है। इस लिए मैं आपको और आपके धन को अपने साथ नहीं ले जाना चाहता था।

ईला—मुझे बताओ, तुम ऐसा क्यों नहीं करना चाहते थे ?

वाकमन—(**बिना उसकी ओर देखे**) मनुष्य को जो चीज़ सब से प्यारी हो, उसे वह संकट में डालने से घबराता है।

ईला—किन्तु आपने अपने आने वाले जीवन को खतरे में डाला, और इससे अधिक प्रेम आपको किस से हो सकता था।

वाकमन—मनुष्य अपने जीवन को सबसे अधिक प्रेम नहीं करता।

ईला—क्या आपके विचार उस समय ऐसे थे ?

वाकमन—ऐसे ही थे।

ईला—क्या आप मुझसे अधिक किसी को प्रेम नहीं करते थे।

वाकमन—मुझे यही याद है।

ईला—और यह होते हुए भी कई व ॅ बीत गए और आपने मुझे अकेला छोड़ कर किसी और दूसरे के साथ विवाह कर लिया।

वाकमन—तुम्हारा परित्याग कर दिया ? मैं यह कह देना चाहता हूँ कि ऐसा मैंने किसी और अभिप्राय से किया। इसके पश्चात् एक और भी प्रेरणा थी—उस व्यक्ति की सहायता के विना मैं कुछ काम नहीं कर सकता था।

ईला—(**अपने भावों को दमन करके**) तो आपने मुझे कोई अच्छा काम करने के लिए छोड़ा।

वाकमन—मेरे लिए उसकी सहायता आवश्यक थी और वह इसी शर्त पर मेरी मदद करने को तैयार था।

ईला—और आप विना झगड़ा किए यह मूल्य देने को मान गए।

बाकमन—मैं इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकता था। मुझे जीतना या हारना था।

ईला—(थरथराती हुई आवाज से) तो फिर आप सच कह रहे हैं कि मैं आप को सबसे प्यारी थी ?

बाकमन—हाँ, उस समय भी और उसके बाद भी।

ईला—किन्तु फिर भी आपने मुझे देकर दूसरे व्यक्ति से सौदा किया। मेरे प्रेम को बैंक का संचालक बनने के लिए बेच दिया।

बाकमन—(शोकातुर होकर और सिर झुकाकर) ईला, मैं इस के सिवाय और कुछ न कर सकता था।

ईला—(सोफे से उठकर कांपते हुए) अपराधी !

बाकमन—(चौंककर) मैं यह शब्द पहले भी सुन चुका हूँ।

ईला—यह विचार मत करो कि मैं इस देश के कानून की ओर संकेत कर रही हूँ। मुझे इस बात की परवाह नहीं कि आप दूसरों का धन खा पी गए। यदि मैं उस संकट में आपकी सहायता कर सकती—।

बाकमन—तो फिर आप क्या करतीं ?

ईला—मुझ पर विश्वास करो, कि मैं सब कुछ सहती। और उस सर्वनाश और अपमान सहन करने में मैं आपकी सहायता करती।

बाकमन—क्या आपमें इतना संकल्प या शक्ति थी ?

ईला—मुझ में शक्ति और संकल्प दोनों थे। क्योंकि उस समय मुझे तुम्हारे घोर अपराध का पता नहीं था।

वाकमन—कौन सा अपराध ?

ईला—मेरा उस अपराध की ओर संकेत है, जो कि क्षमा नहीं किया जा सकता ।

वाकमन—(उसकी ओर देखकर) तुम पागल हो गई हो ।

ईला—(उसके पास आकर) तुम हत्यारे हो, तुमने घोर पाप किया है ।

वाकमन—(पियानो की ओर पीछे हटकर) ईला, तुम पागलों की भाँति बातें कर रही हो ।

ईला—तुमने मेरे प्रेम की हत्या की है । तुम जानते हो इस का क्या अर्थ है ? बाईबल में किसी ऐसे पाप की ओर संकेत है जिसके लिए क्षमा नहीं दी जा सकती । अब मेरी समझ में आया कि वह क्या पाप है—किसी व्यक्ति के प्रेम की हत्या करना घोर पाप है ।

वाकमन—और आपका विचार है कि वह पाप मैंने किया है ?

ईला—हाँ तुमने किया है । आज शाम मेरी आँखें खुल गईं । तुम मुझे छोड़कर एक दूसरी स्त्री की ओर चले गए । मेरा विचार था कि तुम्हारी मानसिक निर्बलता और मेरी बहिन की चालों का परिणाम है । इस से मेरे मन में तुम्हारे लिए घृणा उत्पन्न हो गई है । तुमने अपनी प्रेयसी को छोड़ दिया । कोई और वस्तु लेने के लिए उसका सौदा कर लिया । इस प्रकार तुम मेरी और अपनी आत्मा के हत्या के अपराधी हो ।

वाकमन—(कड़े संयम से) मैं समझ गया कि आप अपने भावों का दमन नहीं कर सकतीं। आप इस बात को अपने दृष्टिकोण से देखती हैं। आप एक स्त्री हैं, आपको ऐसा प्रतीत होता है कि अपने हृदय के सिवाय आप और किसी बात की परवाह नहीं करतीं।

ईला—हाँ, यह ठीक है।

वाकमन—तुम्हारे लिए संसार में अपने हृदय के सिवाय और कुछ नहीं।

ईला—आप ठीक कह रहे हैं, मेरे लिए संसार में और कुछ नहीं।

वाकमन—परन्तु यह मत भूलो कि मैं एक आदमी हूं। मेरे लिए तुम सब से अधिक प्रिय स्त्री थीं। किन्तु यदि स्थिति बहुत बिगड़ जाए तो एक स्त्री दूसरी का स्थान ले सकती है।

ईला—(मुस्कान से) क्या यह आपका अनुभव था जब आपने मेरी बहिन से विवाह किया।

बाकमन—नहीं, मेरे जीवन के उच्च लक्ष्य ने मुझे यह सहन करने में सहायता दी। मैं अपने देश के जंगलों, पहाड़ों और धरती में गुप्तधन पर अधिकार जमा कर, हज़ारों लोगों का भला करना चाहता था।

ईला—(बीते हुए दिनों की याद करके) मैं यह जानती हूँ। उन दिनों कई बार इस विषय पर हमारी बातचीत होती थी।

बाकमन—हाँ, मैं आपसे खुल कर बात कर सकता था।

ईला—मैं आपकी कल्पना का उपहास किया करती थी।

में पूछा करती थी, कि क्या आप खानों में सोई हुई आत्मा को जगाना चाहते हो।

वाकमन—(सिर हिला कर) मुझे ये सब बातें याद हैं।

ईला—किन्तु उस समय आप मेरा उपहास नहीं समझते थे। उस समय आप कहते थे कि हाँ मैं खानों में सोई हुई आत्मा को जगाना चाहता हूँ।

वाकमन—मैं वास्तव में ऐसा करना चाहता था। यदि मैं घोड़े की रकाब में अपना पैर रख सकता। परन्तु ऐसा करने के लिए मुझे उस आदमी का आश्रय लेना पड़ा और वह मुझे बैंक का अधिकार लेकर दे सकता था, यदि मैं……

ईला—यदि आप उस स्त्री को छोड़ दें, जिससे आप प्रेम करते थे, और जिसका आपसे अथाह प्रेम था।

वाकमन—मुझे यह पता था कि वह आपके प्रेम के कारण पागल हुआ फिरता है, और वह मेरी बात किसी और दशा में नहीं मानेगा।

ईला—और आपने सौदा कर लिया।

वाकमन—(प्रचण्डता से) हाँ ईला मैंने ऐसा किया। क्योंकि मैं शक्ति का पुजारी हूँ, और जिन शिखरों तक मैं पहुँचना चाहता था, उनका आधा रास्ता जाने में उस ने मेरी सहायता की। प्रत्येक वर्ष में ऊपर ही ऊपर चढ़ता गया।

ईला—और आपने मुझे भुला दिया।

वाकमन—और कुछ समय के बाद उसने फिर मुझे गढ़े में धकेल दिया। यह भी उसने तुम्हारे कारण ही किया।

ईला—(कुछ देर सोच कर) क्या आप यह नहीं मानते कि हम दोनों का संबंध विधाता को अच्छा नहीं लगा ?

वाकमन—हाँ, पर ऐसा क्यों ? मेरी यह समझ में नहीं आता कि आप ठीक हैं या मैं ?

ईला—आपने पाप किया है। आपने मेरे मन के सारे उल्लास को कुचल दिया है।

वाकमन—(घबराहट के साथ) ईला यह मत कहो।

ईला—मेरे जीवन पर अन्धेरा छा गया। जिस दिन से आपकी प्रतिमा मेरे मन से हटने लगी, मेरा उल्लास नष्ट हो गया। इतने वर्ष मैंने बड़ी मनोवेदना का अनुभव किया है। अब तो किसी व्यक्ति से प्रेम करना मेरे लिए असम्भव है। एक व्यक्ति के अतिरिक्त मैं सबसे दूर भागती हूँ।

वाकमन—वह कौन है ?

ईला—अरहार्ट। आपका पुत्र।

वाकमन—क्या आपको उस से इतना स्नेह है ?

ईला—यदि यह न हो तो उसे मैं इतनी देर अपने पास ले जाकर क्यों रखती ?

वाकमन—मेरा विचार था कि आपने केवल उस पर दया की। जैसे मुझ पर।

ईला—(भावुकता से) दया ! हा, हा ! जब से आपने मुझे छोड़ा है, मैं दया को भूल गई हूँ। यदि कोई भूखा बच्चा मेरे घर रोटी माँगने आता है, तो नौकरों को उसकी सहायता करने को कहती हूँ। मैं स्वयं उसके लिए कुछ नहीं करती।

यौवन में मैं ऐसा कभी नहीं कर सकती थी। आपने मुझे इतना कठोर बना दिया है।

वाकमन—किन्तु आपको अरहार्ट से तो वहुत स्नेह है।

ईला—आपके पुत्र के सिवाय मेरे मन में किसी और प्राणी के लिए दया नहीं। आपने मुझे एक माँ के हर्ष और शोक से वंचित रखा। इस हानि ने मेरा मन पत्थर कर दिया है।

वाकमन—सचमुच, ईला ?

ईला—आप नहीं जानते कि माँ बनने की मेरी कितनी प्रवल इच्छा थी। (**दीर्घ श्वास लेकर**) उस समय मैं इस हानि को सहन न कर सकी, और इसीलिए मैं अरहार्ट को अपने साथ ले गई। वह मुझ से अत्यन्त स्नेह करने लगा, और मैंने उसका पवित्र मन मोह लिया। फिर एक और घटना·······

वाकमन—कौन सी घटना ?

ईला—उसकी माँ उसे आकर ले गई।

वाकमन—उसने एक दिन आना ही था। उसे शहर में आना था।

ईला—(**हाथ मल कर**) हाँ, परन्तु मुझसे अकेलापन सहन नहीं होता। मेरा मन रिक्त है। मुझे अरहार्ट को खो कर चैन नहीं मिलता।

वाकमन—(**क्रूरता भरी आँखों से**) मुझे विश्वास नहीं आता कि अरहार्ट आप से विमुख हो गया। निचले कमरे में दिल इतनी सुगमता से नहीं खोये जाते।

ईला—किन्तु अरहार्ट तो यहाँ ही मुझसे छिन गया है,

ग्रौर वह ग्रपनी माँ से जा मिला है। जो पत्र वह ग्रव मुझे लिखता है, उनसे यह साफ़ पता चलता है।

वाकमन—तो क्या ग्राप उसे ग्रपने साथ वापस ले जाने को यहाँ ग्राई हैं ?

ईला—हाँ, यदि यह संभव होता....!

वाकमन—मेरे विचार में यह संभव है, यदि ग्रापने इस वात का निश्चय कर लिया है, क्योंकि ग्रापका उस पर सब से ग्रधिक ग्रधिकार है।

ईला—ग्रधिकार, ग्रधिकार। इन वातों से क्या लाभ ? यदि वह स्वयं ग्रपनी इच्छानुसार मेरा नहीं बनता तो वह मेरा नहीं। मैं उसका पूर्ण स्नेह चाहती हूँ।

वाकमन—(**उदासीन मुस्कान से**) यह मत भूलो कि ग्ररहार्ट की ग्रायु बीस वर्ष से ग्रधिक हो चुकी है। बहुत देर तक ग्राप उस से पूर्ण स्नेह की ग्राशा नहीं कर सकतीं।

ईला—मेरे जीने का कुछ भरोसा नहीं। इसलिए शायद इस वात को वहुत देर न लगे।

वाकमन—(**हैरान होकर**) मुझे यह पता न था।

ईला—ग्ररहार्ट ने ग्रापको यह नहीं वताया ?

वाकमन—मुझे कुछ याद नहीं।

ईला—शायद उसने ग्रापको मेरे विषय में कुछ भी नहीं कहा ?

वाकमन—हाँ, मुझे कुछ याद है कि उसने कहा था। वह मुझे वहुत कम मिलता है। एक नारी जो निचली छत पर रहती है, उसे मुझ से दूर-दूर रखती है।

ईला—क्या यह आप ठीक कह रहे हैं ?

वाकमन—यह सत्य है। तो आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं।

ईला—हाँ, और इस पतझड़ में मेरी दशा इतनी विगड़ गई थी, कि मुझे शहर आना पड़ा।

वाकमन—क्या किसी डाक्टर ने आपको देखा है ?

ईला—हाँ, आज सवेरे।

वाकमन—उसने क्या कहा ?

ईला—(शांतिपूर्वक) उसने मुझे वही बात वताई जिसका मुझे स्वयं संशय था। मेरी बीमारी का कोई इलाज नहीं।

वाकमन—यह बात मानी नहीं जा सकती। आप इस पर विश्वास न करें।

ईला—मेरे रोग की कोई दवा नहीं। डाक्टर कुछ नहीं कर सकते। वे इसके दौरे को रोक नहीं सकते। वह केवल पीड़ा कम कर सकते हैं। और यह भी अच्छा है।

वाकमन—किन्तु आप काफ़ी देर तक बीमार रहेंगी।

ईला—संभव है मैं इस शरद् ऋतु तक ही जीवित रह सकूँ।

वाकमन—(बिना सोचे) शरद् ऋतु काफ़ी लम्बी होती है।

ईला—(चुपके से) मेरी दशा में किसी प्राणी के लिए तो यह बहुत लम्बी होती है।

वाकमन—(जलदी से विषय बदल कर) परन्तु यह रोग आपको लग कैसे गया ? आपका जीवन तो व्यवस्थित और स्वस्थ रहा है।

ईला—(उसकी ओर देख कर) डाक्टरों का विचार है कि जीवन के किसी भाग में मेरे मन पर भावों का बहुत बोझ पड़ा है।

वाकमन—(चमक कर) मैं समझ गया। आपका यह संकेत है कि इस रोग का कारण मैं हूँ?

ईला—(अत्यन्त व्याकुलता से) अब ये बातें करना व्यर्थ है। परन्तु जाने से पहिले मुझे मेरा प्रिय बालक वापस मिलना चाहिए। मैं यह सोच कर बहुत व्याकुल होती हूँ, कि मैं मर भी जाऊँ और ऐसा कोई व्यक्ति भी न हो जिसे मेरी मृत्यु का शोक हो। जो कि मुझे ऐसे याद करे जैसे पुत्र माँ को याद करता है।

वाकमन—ईला, उसे ले जाओ, यदि वह स्नेह से बन्धा हुआ आपकी ओर आ सकता है।

ईला—(चमक कर) क्या आपको यह स्वीकार है?

बाकमन—(उदासीनता से) मेरे लिए यह कोई बड़ा भारी बलिदान नहीं।

ईला—फिर भी आपके बलिदान के लिए धन्यवाद! मैं आपसे एक और चीज़ माँगना चाहती हूँ।

वाकमन—वह क्या?

ईला—मुझे पता है कि आप इसे बच्चों वाली बात समझेंगे। मरने के बाद मैं अपना सारा धन अरहार्ट के लिए छोड़ना चाहती हूँ।

बाकमन—हाँ, उससे अधिक आपको कोई प्यारा नहीं।

आपके घराने का और कोई नर-नारी जीवित भी नहीं। मेरा संकेत रेन्थीम घराने से है।

ईला—(धीरे-धीरे सिर हिला कर) हाँ यह सत्य है। रेन्थीम घराने का नाम मेरे साथ ही समाप्त हो जाएगा, यह सोच कर मुझे बहुत दुःख होता है।

वाकमन—(उत्तेजित होकर) मैं आपका अभिप्राय समझ गया।

ईला—(तीव्रता से) यह आज्ञा दो कि अरहार्ट मेरी मौत के बाद रेन्थीम घराने का नाम जीवित रखे।

वाकमन—(उसकी ओर देख कर) आपकी इच्छा है कि मेरे पुत्र को उसके पिता के नाम का कलंक न लगे?

ईला—नहीं, नहीं, मेरा यह अभिप्राय नहीं। मैं स्वयं आपका नाम अपनाना चाहती हूँ। परन्तु मैं अब कोई दिन की मेहमान हूँ। आप नहीं समझ सकते कि इस दशा में अपना नाम कितना प्रिय होता है।

वाकमन—(शीतलता और अभिमान से) ईला, मैं स्वयं अकेला अपने नाम को अपनाने को तैयार हूँ।

ईला—(उसका हाथ पकड़ कर) धन्यवाद, धन्यवाद! अब हम दोनों में पूरा समझौता हो गया। आपने मेरे लिए बहुत कुछ कर दिया। जब मैं इस संसार से चली जाऊँगी, तो अरहार्ट रेन्थीम मेरे घराने के नाम को जीवित रखेगा।

[जिस दरवाजे के आगे परदा लटक रहा है, उसे कोई खोल देता है। श्रीमती वाकमन दिखाई देती है।]

श्रीमती बाकमन—(अत्यन्त व्याकुलता से) अपने जीवन के अंत तक अरहार्ट कभी रेन्थीम नहीं कहलाएगा।

ईला—(पीछे हट कर) आप ?

बाकमन—(निर्दयता से) मैं किसी को अपने कमरे में आने की आज्ञा नहीं देता।

श्रीमती बाकमन—मैं किसी की आज्ञा नहीं माँगती।

बाकमन—(उसकी ओर जाकर) आपको मेरे साथ क्या काम है ?

श्रीमती बाकमन—मैं अपनी सारी शक्ति से लड़कर दुष्टों से आपकी रक्षा करूँगी।

ईला—तुम से अधिक नीच और कौन हो सकता है ?

श्रीमती बाकमन—ऐसा ही सही। (भुजा फैला कर) पर यह मैं आपको बता देती हूँ कि अरहार्ट अपने पिता का नाम नहीं छोड़ेगा और मैं ही उसकी माँ हूँ। केवल मैं। उसका मन मेरा ही होगा किसी और का नहीं।

[वह दरवाजा बन्द करके बाहर चली जाती है।]

ईला—(घबरा कर) श्री बाकमन, इस तूफान में अरहार्ट का जीवन नष्ट हो जाएगा। आप दोनों के बीच समझौता आवश्यक है। हमें इसी समय श्रीमती बाकमन के पास जाना चाहिये।

बाकमन—(उसकी ओर देख कर) हम दोनों वहाँ जाएँगे ?

ईला—मैं और आप।

वाकमन—(सिर हिला कर) में आपको बताना चाहता हूँ कि वह बहुत निर्दय और कठोर है ।

ईला—चलो चल कर देख लो ।

[वाकमन कोई उत्तर नहीं देता, और संदेह पूर्वक ईला की ओर देखता है ।]

तीसरा अंक

[श्रीमती वाकमन का गोल कमरा । मेज़ पर लैम्प जल रहा है । उसके कंधों पर शाल है । वह खिड़की के पास जा कर परदा खींचती है, और बाहर देखती है । कुछ देर बैठने के बाद घंटी बजाती है । फिर सोफे के पास खड़ी हो जाती है । उसका मन उत्तेजित है । फिर ज़ोर से घंटी बजाती है । नौकरानी हाल कमरे में आती है । उसकी आँखों में नींद है, और ऐसा प्रतीत होता है कि उसने जल्दी से कपड़े पहने हैं ।]

श्रीमती वकमन—(उतावलेपन से) मालिना तुम्हें क्या हो गया था, मैंने दो बार तुम्हें बुलाने के लिए घंटी बजाई ।

नौकरानी—हाँ, मैंने घंटी सुनी थी ?

श्रीमती वाकमन—और फिर भी तुम नहीं आई ?

नौकरानी—में कपड़े पहिन रही थी ।

श्रीमती वाकमन—जाओ ठीक से कपड़े पहिन लो, और दौड़कर अरहार्ट को बुला लाओ ।

नौकरानी—(विस्मित होकर) आप चाहती हैं कि मैं आपके बेटे को बुला लाऊँ ?

श्रीमती वाकमन—हाँ, उसे कहो कि तुम्हारी माँ ने तुम्हें तुरन्त बुलाया है ।

नौकरानी—पहले मैं गाड़ीवान को बुलाकर लाती हूँ ।

श्रीमती वाकमन—क्यों ?

नौकरानी—आज रात बहुत बरफ़ पड़ रही है और पैदल जाना कठिन है ।

श्रीमती वाकमन—ऐसा ही सही । जल्दी करो । वह घर यहाँ से बहुत समीप है ।

नौकरानी—आप उस स्थान को समीप कह सकती हैं ?

श्रीमती वाकमन—हाँ समीप तो है । तुम्हें श्री हिंकलस के घर का पता नहीं ?

नौकरानी—(द्वेष पूर्वक) आज शाम अरहार्ट वहाँ गया था ?

श्रीमती वाकमन—(विस्मित होकर) और वह कहाँ जा सकता है ?

नौकरानी—श्रीमती विल्टन के घर ।

श्रीमती वाकमन—मेरा बेटा उसके घर बहुत बार नहीं जाता ।

नौकरानी—(बुड़बुड़ाकर) मैंने सुना है कि हरेक दिन वह वहाँ जाता है ।

श्रीमती वाकमन—यह बकवास है । मलिना सीधी हिंकलस के घर जाओ और उसे बुला लाओ ।

नौकरानी—(सिर हिलाकर,) बहुत अच्छा, मैं जा रही हूँ।

[वह जाने को है। उसी समय कमरे का दरवाज़ा खुलता है और ईला और श्री वाकमन अन्दर आते हैं।]

श्रीमती वाकमन—(कांप कर एकदम पीछे हटती है) इसका क्या मतलब ?

नौकरानी—(डर जाती है) परमात्मा बचाए।

श्रीमती वाकमन—(नौकरानी के कान में) उसे कहो कि तुरन्त घर लौटे।

नौकरानी—बहुत अच्छा मेम साहब।

[ईला और श्री वाकमन कमरे के अन्दर आ जाते हैं। नौकरानी उसी समय बाहर चली जाती है।]

श्रीमती वाकमन—(संयम के साथ ईला से) वे मेरे कमरे में क्या करने आये हैं ?

ईला—वह तुम्हारे साथ समझौता करना चाहते हैं।

श्रीमती वाकमन—उन्होंनें पहले कभी ऐसा करने का प्रयत्न नहीं किया।

ईला—आज शाम उनका यही प्रयोजन है।

श्रीमती वाकमन—इससे पहिले कई वर्ष हुए हम दोनों कचहरी में एक दूसरे के सामने हुए थे, जब मझे बयान देने के लिए बुलाया गया था।

वाकमन—(समीप आकर) आज मैं अपना बयान देने आया हूँ।

श्रीमती वाकमन—(आंखें फाड़कर) आप ?

वाकमन—मैं अपनी ग़लती के विषय में कुछ नहीं कहना चाहता। उसे सब लोग जानते हैं।

श्रीमती वाकमन—(निःश्वास से) हाँ यह ठीक है, सारे लोगों को पता है।

वाकमन—किन्तु उनको यह पता नहीं कि मैंने ऐसा क्यों किया। इस बात का मेरे चरित्र से सबंध है। यह सारी बात मैं बताना चाहता हूँ।

श्रीमती वाकमन—यह सब कुछ व्यर्थ है। अपराधी इस लिए क्षमा नहीं कर दिया जाता कि उसे किसी ने भड़काया अथवा किसी तरह का लालच था।

वाकमन—उसकी आत्मा तो उसे अपराधी नहीं समझती।

श्रीमती वाकमन—(ग्लानि का संकेत करके) अजी जाने दो, मैं आगे ही इस विपय पर कई बार सोच विचार कर ही चुकी हूँ।

वाकमन—और मैं भी—पाँच साल जेल की कोठड़ी में और उसके बाद, मुझे इस बात को सोचने का समय मिला है। कई वार मन ही मन में मैंने यह अभियोग लड़ा है। मैं स्वयं ही अपराधी, वकील और जज बनता था। निष्पक्षता से विचार करके मैंने यह परिणाम निकाला है कि सबसे अधिक पाप और अन्याय मैंने अपने साथ ही किया है।

श्रीमती वाकमन—मेरे और अपने पुत्र के साथ नहीं?

वाकमन—आप दोनों को मैं अपना ही भाग समझता हूँ।

श्रीमती वाकमन—सैंकड़ों और लोग जिनका आपने सर्वनाश किया, उनके विषय में आपका क्या विचार है ?

वाकमन—(और भड़ककर) मेरे हाथ में शक्ति थी। मेरे अन्दर एक विशेष कार्य करने की लगन थी। पृथ्वी के अंदर गुप्त धातु मुझ से याचना कर रही थी कि हमें कैद से छुड़ाओ और कोई उनकी पुकार न सुनता था।

श्रीमती वाकमन—ताकि वाकमन का नाम सदा उनमें खोदा जाय।

वाकमन—यदि किसी और के पास इतनी शक्ति होती तो वह क्या ऐसा न करता ?

श्रीमती वाकमन—आपके विना और कोई ऐसा न करता।

वाकमन—संभवतः वे न करते, क्योंकि उन लोगों में इतनी बुद्धि न थी। मैं जो चाहता था उसे मैंने किया।

ईला—(चुपके से) क्या यह बात आप इतने विश्वास से कह सकते हैं ?

वाकमन—(सिर हिलाकर) यह कार्य तो मैंने किया, किन्तु इसके बाद मैं अपने आप को किसी हद तक अपराधी समझता हूँ।

श्रीमती वाकमन—वह कैसे ?

वाकमन—मैं आठ वर्ष छिप कर बैठा रहा, और मैंने अपने जीवन का इतना अनमोल समय नष्ट कर दिया। मुझे फिर दुनिया में निकल कर काम करना चाहिए था। कोई

छोटा सा काम आरम्भ करके, उन्नति करके ऊपर चढ़ना चाहिये था। सब कठिनाइयों का सामना करना मेरा कर्तव्य था।

श्रीमती वाकमन—मुझे निश्चय है कि परिणाम वही होता, जो पहले हुआ था।

वाकमन—(उसकी ओर देखकर) यह ठीक है कि कोई नई बात नहीं होती। किन्तु जो एक बार हो चुका है वह फिर नहीं होता। देखने वालों की आँख काम को बदल देती है—(रुककर) यह बात आपको समझ नहीं आ सकती।

श्रीमती वाकमन—(कर्कशता से) नहीं, मैं इस बात को नहीं समझती।

वाकमन—मुझे यही शाप मिला हुआ है कि मुझे एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं मिला, जो मुझे समझ सके।

ईला—(उसकी ओर देखकर) श्री वाकमन कभी नहीं ?

वाकमन—बहुत समय बीत चुका जब मैं यह सोचता था कि मुझे समझने वाले की आवश्यकता ही नहीं, तो मुझे एक ऐसा व्यक्ति शायद मिला था। उसके बाद कोई नहीं। किसी ने मेरी आवश्यक ताड़ना को नहीं समझा। मुझे ऐसा व्यक्ति ही चाहिए था जो मुझे यह कहे कि मैंने कोई ऐसा पाप नहीं किया जो क्षमा नहीं किया जा सकता।

श्रीमती वाकमन—(अपमानपूर्वक हँसी के साथ) तो फिर आपके लिए यह आवश्यक है कि और कोई आपको इस बात का अनुभव कराए।

वाकमन—(क्रोध के साथ) जब सारा संसार एक स्वर से

मुझे कहे कि मैं इतना गिर गया हूँ कि अब मेरे लिए फिर से उठना असम्भव है, तो मुझे भी कभी कभी ऐसा प्रतीत होता है कि यह सच है। किन्तु फिर मेरी आत्मा मुझे यह कहती है कि मैं अपराधी नहीं हूँ।

श्रीमती वाकमन—(उसकी ओर क्रूरता से देखकर) आपने मेरे पास आकर कभी समझौते के लिए क्यों नहीं कहा ?

वाकमन—आपके पास आने से क्या लाभ था ?

श्रीमती वाकमन—(तिरस्कार से) सच्ची बात तो यह है कि आपने अपने अतिरिक्त और किसी से प्रेम नहीं किया।

वाकमन— (अभिमान पूर्वक) मैं केवल एक शक्ति का ही पुजारी था।

श्रीमती वाकमन—हाँ शक्ति !

वाकमन मेरी यह इच्छा थी कि मैं मानव जाति को सुख प्रदान कर सकूँ।

श्रीमती वाकमन—कभी आप मुझे सुखी बना सकते थे। आपने उस शक्ति का क्या प्रयोग किया ?

वाकमन—(उसकी ओर बिना देखे) जब जहाज़ डूबता है तो कोई न कोई उसके साथ डूब ही जाता है।

श्रीमती वाकमन—और अपने पुत्र के लिए ?

वाकमन—मैं उसे नहीं जानता।

श्रीमती वाकमन—यह ठीक है। आप उसे जानते तक नहीं हैं।

वाकमन—(कठोरता से) उसकी माँ ने विशेष प्रयत्न किया है कि मैं उसे न जान सकूँ ।

श्रीमती वाकमन—(गर्व के साथ) आपको क्या पता है कि मैंने क्या क्या किया है ?

वाकमन—मैं जानना चाहता हूँ ।

श्रीमती वाकमन—मैं यह यत्न करती रही हूँ कि आपकी याद मेरे दिल में ताजा रहे ।

वाकमन—(सूखी हँसी के साथ) मेरी याद ? सचमुच ऐसा प्रतीत होता है कि मैं मर चुका हूँ ।

श्रीमती वाकमन—(तीव्रता से) हाँ यह ठीक है ।

वाकमन—(धीरे धीरे) संभव है आप ठीक कह रही हैं । (उत्तेजित होकर) किन्तु अभी नहीं, नहीं । मृत्यु के समीप जा कर मेरी आँख खुल गई है । अभी मैंने अपना सारा जीवन बिताना है । मेरे लक्ष्य मेरी ओर संकेत कर रहे हैं । आप भी यह सब कुछ देखेंगी ।

श्रीमती वाकमन—(हाथ उठाकर) ये सब स्वप्न व्यर्थ हैं । चुपके से जहाँ हो पड़े रहो ।

वाकमन—(संक्षोभ से) आप इस प्रकार की बात कैसे कह सकती हैं ?

श्रीमती वाकमन—(उसे सुने बिना) मैं आपकी समाधि बनवाऊँगी ।

वाकमन—मेरे अपमान का स्तम्भ ?

श्रीमती वाकमन—नहीं, यह पत्थर या धातु का स्तम्भ

होगा। इस पर मैं किसी को कुछ न लिखने दूँगी। आप की समाधि के चारों ओर पेड़ और झाड़ियाँ होंगी। वह आपके अपमान को छिपाएँगी। लोगों की आँखें उसे न देख सकेंगी।

बाकमन—(**कटाक्ष के साथ**) तो यह अपने प्रेम का प्रमाण आप देंगी ?

श्रीमती बाकमन—मैं स्वयं इस कार्य को नहीं कर सकती परन्तु मैंने अपने पुत्र को पाला पोसा है जो यह सब कुछ करेगा। उसका जीवन स्वच्छ होगा ताकि लोग आपके अपमान को भूल जायें।

बाकमन—(**धमकी देकर**) आपका संकेत अरहार्ट की ओर है ? मुझे झट बताओ।

श्रीमती बाकमन—(**उसकी ओर देखकर**) हाँ वह ही अरहार्ट जिसे आप इसलिए छोड़ने को तैयार हैं ताकि आपके पाप धुल सकें।

बाकमन—(**ईला की ओर देखकर**) अपना सब से बड़ा पाप धोने के लिए।

श्रीमती बाकमन—(**तिरस्कार पूर्वक**) इस पाप का संबंध एक और व्यक्ति के साथ है। यह मत भूलो कि मेरे प्रति आपने क्या पाप किया है। (**उसकी ओर देखकर**) किन्तु वह आपका कहा न मानेगा। मेरी पुकार सुनकर वह मेरे पास आएगा। और वह यहाँ ही रहेगा। मेरे साथ, किसी और के साथ नहीं। (**झट रो पड़ती है**) मुझे उसकी आवाज़ सुनाई दे रही है। वह देखो वह आ गया। अरहार्ट !

[अरहार्ट जल्दी से दरवाजा खोलकर अन्दर आता है। उसने बड़ा कोट और टोपी पहनी हुई है।]

अरहार्ट—(पीला और चिन्तातुर होकर) माँ! क्या हुआ? (अपने पिता को देखकर टोपी उतार देता है। कुछ देर चुप रह कर पूछता है।) आपको मेरी माँ के साथ क्या काम है? क्या हुआ है?

श्रीमती बाकमन—(अपनी भुजायें उसकी ओर बढ़ाकर) अरहार्ट, मैं तुम्हें देखना चाहती हूँ। मैं सदा तुम्हें अपने पास रखना चाहती हूँ।

अरहार्ट—(थथलाकर) आप सदा के लिए मुझे लेना चाहती हैं? इससे आपका क्या तात्पर्य है?

श्रीमती बाकमन—मैं कहती हूँ मैं तुम्हें अपनाना चाहती हूँ। कोई तुम्हें मुझसे छीनकर ले जाना चाहता है।

अरहार्ट—(पीछे हटकर) आह! आप यह जानती हैं?

श्रीमती बाकमन—हाँ, तुमको भी इस बात का पता है?

अरहार्ट—(विस्मित होकर) हाँ, मैं यह जानता हूँ।

श्रीमती बाकमन—आह! तुम सब लोगों ने मिलकर मुझे बिना बताए षड्यन्त्र रचा है? अरहार्ट! अरहार्ट!

अरहार्ट—माँ, मुझे बताओ, आप क्या जानती हैं?

श्रीमती बाकमन—मैं सब कुछ जानती हूँ। मुझे पता है कि तुम्हारी मासी तुम्हें अपने साथ ले जाना चाहती हैं।

अरहार्ट—मासी ईला!

ईला—एक क्षण मेरी बात सुन लो।

श्रीमती बाकमन—यह तुम्हें मुझसे छीनना चाहती है। यह स्वयं तुम्हारी माँ बनना चाहती है। इसकी इच्छा है कि तुम इसके पुत्र बनो, और मेरी गोद खाली हो जाए ? यह चाहती है कि तुम रेन्थीम का नाम धारण कर लो और अपना नाम छोड़ दो, फिर तुम्हें इसका सारा धन मिल जायगा ।

अरहार्ट—मासी क्या यह सच है ?

ईला—हाँ यह ठीक है।

अरहार्ट—मुझे कुछ पता नहीं, आप मुझे फिर क्यों ले जाना चाहती हैं।

ईला—मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम अब मेरे नहीं रहे।

श्रीमती बाकमन—(कर्कशता से) वह तुम्हें छोड़कर मेरा बन गया है; और उसे ऐसा ही करना चाहिए।

ईला—(उससे याचना करके) अरहार्ट, मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकती। तुम यह नहीं जानते कि मैंने बहुत दिन जीना नहीं है ?

अरहार्ट—सचमुच ?

ईला—हाँ क्या तुम मौत के समय मेरे पास नहीं रहोगे ? मेरे पुत्र बनकर मुझ से स्नेह नहीं करोगे ?

श्रीमती बाकमन—अपनी माँ और अपने जीवन के लक्ष्य को छोड़कर ? अरहार्ट क्या तुम ऐसा करोगे ?

ईला—मेरा काल समीप है। मुझे उत्तर दो।

अरहार्ट—(भावुकता से) मासी आपने मेरे साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार किया है। जब आपने बचपन से मेरा पालन किया, तो मैं आपके पास बड़ा सुखी रहा।

श्रीमती बाकमन—अरहार्ट ! अरहार्ट !

ईला—अरहार्ट मैं यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुई हूँ कि तुमने मेरे किये को अब तक याद रखा।

अरहार्ट—किन्तु अब आप मुझसे बहुत बड़े बलिदान की आशा कर रही हैं। मैं अपनी माँ को छोड़कर आपका पुत्र नहीं बन सकता।

श्रीमती बाकमन—(विजय भाव से) मैं यह जानती थी कि तुम इसे नहीं अपनाओगे। ईला आपको मेरा बेटा नहीं मिल सकता।

ईला—(शोकातुर होकर) आपकी जीत हुई।

श्रीमती बाकमन—हाँ, हाँ ! वह मेरा है और सदा मेरा ही रहेगा। प्रिय अरहार्ट कहो कि मैं ठीक कह रही हूँ। अभी हम दोनों ने बहुत समय तक इकट्ठे रहना है।

अरहार्ट—(अपने भाव दबाकर) माँ, यह मैं आपसे साफ़ साफ़ कह दूँ—।

श्रीमती बाकमन—(उत्सुकता से) क्या ?

अरहार्ट—मुझे भय है कि हम दोनों चिरकाल तक इकट्ठे न रह सकेंगे।

श्रीमती बाकमन—(वज्रपात) इस से तुम्हारा क्या मतलब है ?

अरहार्ट—(**साहस करके**) माँ, यह मत भूलो कि मैं युवा हूँ। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इस बंद कमरे की वायु से मेरा दम घुट जाएगा।

श्रीमती बाकमन—यहाँ मेरे साथ रहकर ?

अरहार्ट—हाँ।

ईला—तो अरहार्ट मेरे साथ चलो।

अरहार्ट—मासी जी इस घर और आपके घर में कोई अधिक भेद नहीं। वहाँ गुलाब के इतर और लेवेण्डर की सुगन्ध अवश्य है। किन्तु वहाँ की वायु में भी मेरा दम घुटता है।

श्रीमती बाकमन—(**संयम के साथ**) अपनी माँ के घर में तुम्हारा दम घुटता है ?

अरहार्ट—(**अधीरता से**) मैं अपने मन की बात को और किसी तरह बतला नहीं सकता। मैं यह सहन नहीं कर सकता कि मेरी इतनी देख भाल की जाए, और मुझे मूर्ति समझ कर पूजा जाए।

श्रीमती बाकमन—(**बड़ी गंभीरता से**) क्या तुम भूल गए कि तुम्हारे जीवन का एक विशेष लक्ष्य है ?

अरहार्ट—(**विस्फोट के साथ**) मैंने किसके लिए अपने जीवन का बलिदान करना है ? आप मुझे अपनी इच्छानुसार कुछ भी नहीं करने देतीं। अब चिरकाल तक मैं किसी बन्धन में नहीं रह सकता। मैं युवा हूँ। मैं किसी और का पाप धोने के लिए अपने जीवन को नष्ट नहीं कर सकता।

श्रीमती बाकमन—(व्याकुल होकर) अरहार्ट, तुम्हें किसने बदल दिया ?

अरहार्ट—मैंने स्वयं अपने आप को बदला है।

श्रीमती बाकमन—नहीं, नहीं। तुम पर किसी और का प्रभाव है। अब तुम्हारी माँ का तुम पर कोई अधिकार नहीं। अब तुम अपनी मासी का कहा भी नहीं मानते।

अरहार्ट—माँ, अब मैं सब कुछ अपनी इच्छा के अनुसार करता हूँ।

बाकमन—(अरहार्ट की ओर जाकर) बस अब मेरे जीवन पर अँधेरा छा गया।

अरहार्ट—(नम्रता पूर्वक) वह कैसे ? मुझे यह बात समझाओ।

श्रीमती बाकमन—(तिरस्कार पूर्वक) हाँ, तुम यह बात पूछो।

बाकमन—अरहार्ट सुनो। क्या तुम अपने पिता के साथ मिलकर काम न करोगे ? जिस मनुष्य का पतन हो चुका हो उसको कोई और व्यक्ति उभार नहीं सकता। इस बंद कमरे में तुम्हें कई झूठी कहानियाँ सुनाई गईं। यदि तुम सन्तों के समान भी जीवन व्यतीत करो तो मुझे इससे कोई लाभ नहीं हो सकता।

अरहार्ट—(सम्मान पूर्वक) आपका कहना ठीक है।

बाकमन—और यदि अन्याय के कारण मैं चुपचाप घुलता रहूँ, तो वह भी व्यर्थ है। इतने वर्ष मैं आशा के सुनहरे स्वप्न देखकर जीता रहा। परन्तु मेरी तरह का मनुष्य केवल ऐसा

करने से शांति प्राप्त नहीं कर सकता। अब मैं कुछ काम करना चाहता हूँ।

अरहार्ट—(सिर झुकाकर) और आप क्या करेंगे ?

बाकमन—मैं स्वयं अपने आप को मुक्त करने का प्रयत्न करूँगा। मैं पहिले कोई छोटा काम करके आगे बढ़ने का प्रयत्न करूँगा। युवावस्था में यह मेरा अनुभव था कि काम करने से ही जीवन में सुख मिल सकेगा। अब तो परिश्रम करने की और भी आवश्यकता है। अरहार्ट ! क्या इस नए जीवन में तुम मेरी सहायता करने को तैयार हो ?

श्रीमती बाकमन—(हाथ उठाकर) अरहार्ट, यह मत करना।

ईला—अरहार्ट अवश्य इनकी सहायता करो।

श्रीमती बाकमन—और आप उसे यह उपदेश देती हैं ? तुम जो अकेली हो, और मरने वाली हो !

ईला—मुझे अपनी चिंता नहीं।

श्रीमती बाकमन—हाँ आपको कोई चिन्ता नहीं, क्योंकि अब मैं तो अरहार्ट को आपसे दूर नहीं कर रही।

ईला—ठीक ऐसा ही है।

बाकमन—अरहार्ट तुम्हारा क्या विचार है ?

अरहार्ट—(पीड़ित ध्वनि से) पिताजी; इस समय मेरे लिए कुछ भी करना असम्भव है।

बाकमन—तो तुम क्या करना चाहते हो ?

अरहार्ट—(हर्ष के साथ) मैं युवा हूँ, और दूसरों की

भाँति मैं भी अब अपनी इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ ।

ईला—मेरे ढलते जीवन को सुखी बनाने के लिए, तुम दो तीन महीने का त्याग भी नहीं कर सकते ?

अरहार्ट—यदि मैं ऐसा करना भी चाहूँ तो भी मैं नहीं कर सकता ।

ईला—उस व्यक्ति के लिए भी नहीं जो तुम से इतना स्नेह करती हो ?

अरहार्ट—मैं गंभीरता से आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं नहीं कर सकता ।

श्रीमती बाकमन—(**उसकी ओर देखकर**) आपकी माँ का भी आप पर कोई अधिकार नहीं ?

अरहार्ट—मैं सदा आपसे स्नेह करूँगा, परन्तु मुझे अपनी इच्छानुसार अपना जीवन व्यतीत करना है । इसके विना मेरा सुख अधूरा है ।

बाकमन—फिर आओ और मेरे साथी बनो । जीवन काम के लिए बना है । चलो हम दोनों इकट्ठे काम करेंगे ।

अरहार्ट—हाँ, पर मैं अब काम नहीं करना चाहता । अब मुझे अपने यौवन का पूरा अनुभव हो रहा है, जैसा कि पहिले कभी नहीं हुआ । मैं काम नहीं करूँगा । मैं केवल सुख-पूर्वक जीवन व्यतीत करूँगा ।

श्रीमती बाकमन—(**चीख कर**) तुम क्या इस उद्देश्य से अपना जीवन व्यतीत करना चाहते हो ?

अरहार्ट—माँ, सुख के लिए।

श्रीमती बाकमन—और तुम्हें सुख कहाँ मिलेगा ?

अरहार्ट—मुझे वह पहले ही मिल गया है।

श्रीमती बाकमन—(रोकर) अरहार्ट !

[अरहार्ट जा कर हाल कमरे का दरवाजा खोल देता है।]

अरहार्ट —(किसी को बुला कर) फ़ैनी, तुम अब अन्दर आ सकती हो।

[श्रीमती विल्टन दिखाई देती है।]

श्रीमती बाकमन—(हाथ ऊपर करके) श्रीमती विल्टन !

श्रीमती विल्टन—(झिझक कर) क्या आप चाहते हैं कि मैं......?

अरहार्ट—हाँ अन्दर आ जाओ, मैंने इनको सब कुछ बता दिया है।

[श्रीमती विल्टन कमरे के अन्दर आ जाती है। अरहार्ट दरवाजा बन्द कर देता है। वह श्रीबाकमन को सिर झुका कर प्रणाम करती है और वह उसे उत्तर देता है।]

श्रीमती विल्टन—(दबी आवाज़ से) तो बात सुना दी गई, और आप सब का विचार है कि मैंने इस घराने के लिए संकट खड़ा कर दिया है ?

श्रीमती बाकमन—(धीरे-धीरे, उस की ओर देख कर) मुझ में जो थोड़ी बहुत जीने की इच्छा थी, उसे तुमने कुचल दिया (विस्फोट के साथ) किन्तु यह नहीं हो सकता।

श्रीमती विल्टन—मैं यह अच्छी प्रकार समझ सकती हूँ, कि आप को यह असंभव ही प्रतीत होगा।

श्रीमती वाकमन—तुम स्वयं देख सकती हो कि ऐसा हो नहीं सकता। अथवा और कुछ...?

श्रीमती विल्टन—जान ऐसा ही पड़ता है कि ऐसा होना कठिन है। परन्तु यह हो चुका है।

श्रीमती वाकमन—(**अरहार्ट की ओर देख कर**) अरहार्ट, क्या तुम सचमुच इस बात पर तुले हुए हो ?

अरहार्ट—मैं केवल यह कह सकता हूँ कि मेरे जीवन का सुख इस बात पर निर्भर है।

श्रीमती वाकमन—(**हाथ में हाथ डाल कर, श्रीमती विल्टन को**) तुम ने मेरे बेटे को फुलसा कर धोखा दिया है।

श्रीमती विल्टन—(**गर्व से सिर उठा कर**) मैंने कुछ नहीं किया।

श्रीमती वाकमन—मैं कैसे तुम्हारी बात मानूँ ?

श्रीमती विल्टन—अरहार्ट अपनी इच्छानुसार मेरे पास आया, और मैं आधा रास्ता आगे जाकर उसे मिली।

श्रीमती वाकमन—(**तिरस्कार पूर्वक श्रीमती विल्टन के कथन को जांच कर**) हाँ सचमुच। यह मैं सुगमता से मान सकती हूँ।

श्रीमती विल्टन—(**संयम के साथ**) श्रीमती वाकमन, जीवन में कई विचित्र घटनाएँ होती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आप उनके विषय में कुछ नहीं जानतीं।

श्रीमती वाकमन—वे क्या हैं ?

श्रीमती विल्टन—जीवन के जाल में फँस कर कई बार दो व्यक्तियों को एक दूसरे से स्थायी संबन्ध करना पड़ता है। ऐसा करते समय वे निर्भय हो जाते हैं।

श्रीमती बाकमन—(मुस्कान से) मेरा विचार था कि आपने आगे ही किसी और से अटल संबन्ध जोड़ा हुआ है।

श्रीमती विल्टन—(झटपट) उसने मुझे छोड़ दिया था।

श्रीमती वाकमन—सुना है कि वह अभी जीवित है।

श्रीमती विल्टन—मेरे लिए वह मर चुका है।

अरहार्ट—(आग्रह कर के) हाँ माँ जी, वह फ़ैनी के लिए मर चुका है। और मैं इस बात की परवाह नहीं करता।

श्रीमती वाकमन—(कर्कशता से) तो तुम उस दूसरे के विषय में सब कुछ जानते हो ?

अरहार्ट—हाँ, मैं सब कुछ जानता हूँ।

श्रीमती बाकमन—फिर भी तुम कहते हो, इस से आप के निश्चय में कोई अन्तर नहीं पड़ता ?

अरहार्ट—(उसकी बात को न मान कर) मैं आप से आगे कह चुका हूँ कि मैं युवा हूँ और मुझे सुख चाहिये।

श्रीमती वाकमन—अभी तुम इन बातों के लिए बहुत छोटे हो।

श्रीमती विल्टन—(गंभीरता से) श्रीमती वाकमन, आप यह न समझें कि मैंने इसे यह सब कुछ नहीं कहा। मैंने इसे अपनी सारी जीवन कहानी सुनाई है। कई बार मैंने इस को कहा है कि यह मुझ से सात साल छोटा है......।

अरहार्ट—(उस की बात काट कर) फ़ैनी ये क्या बातें कर रही हो ? मुझे यह पहले ही पता था।

श्रीमती विल्टन—परन्तु आप पर किसी बात का प्रभाव न हुआ !

श्रीमती वाकमन—यदि ऐसी ही बात थी, तो आप ने इसे आरम्भ में ही मना क्यों न कर दिया। उचित समय पर आप ने इसे कह क्यों न दिया कि वह मेरे घर न आया करे।

श्रीमती विल्टन—(धीमी आवाज़ से) श्रीमती वाकमन, मैं इसे न नहीं कर सकती थी।

श्रीमती वाकमन—क्यों नहीं कर सकती थी ?

श्रीमती विल्टन—क्योंकि मेरे लिए भी यह सुखकर था।

श्रीमती वाकमन—हूँ ! सुख ! आनन्द ! क्या कपट जाल है !

श्रीमती विल्टन—मेरा जीवन इतना दुःखी रहा है, कि जब आनन्द मेरे पास आए तो मैं उसे परे नहीं हटा सकती।

श्रीमती वाकमन—आपका क्या विचार है कि यह आनन्द कितने समय तक रहेगा ?

अरहार्ट—(बात काट कर) अब यह विचार करने का समय नहीं है कि यह सुख चिरकाल तक रहेगा या नहीं।

श्रीमती वाकमन—(क्रोध से) बेटे, तुम अन्धे हो गए हो ! क्या तुम नहीं समझते कि तुम्हारी स्थिति का अन्त क्या होगा ?

अरहार्ट—मैं भविष्य की ओर नहीं देखना चाहता। किसी दशा को भी न देख कर, मैं स्वयं अपनी इच्छा अनुसार अपना जीवन बिताना चाहता हूँ।

श्रीमती वाकमन—(दुःखपूर्वक) और तुम इसे जीवन समझते हो !

अरहार्ट—क्या आप नहीं देखतीं कि वह कितनी सुन्दर है ?

श्रीमती बाकमन—(हाथ मल कर) अब मुझे यह अपमान भी सहना पड़ेगा ।

बाकमन—(निर्दयता से) आप को ऐसे अनुभव का पहले ही अभ्यास है ।

ईला—(याचना से) श्री बाकमन !

अरहार्ट—पिता जी !

श्रीमती बाकमन—प्रत्येक दिन मुझे अपने पुत्र को इसके साथ जुड़ा हुआ देखना पड़ेगा ।

अरहार्ट—(कर्कशता से बात काट कर) आप को कुछ नहीं देखना पड़ेगा ! शान्ति करो, मैं यहाँ नहीं रहूँगा ।

श्रीमती विल्टन—(शीघ्रता से) श्रीमती बाकमन, हम दोनों यहाँ से जा रहे हैं ।

श्रीमतो बाकमन—(पीली होकर) अरहार्ट, क्या तुम भी जा रहे हो ?

श्रीमती विल्टन—(सिर हिलाकर) हम दोनों जा रहे हैं । मैं एक कन्या को भी अपने साथ ले जा रही हूँ ।

श्रीमती बाकमन—किस कन्या को ?

श्रीमती विल्टन—फ़रीडा फोलडल जो मेरे पास रहती है, मेरे साथ जा रही है । मेरी इच्छा है कि वह मेरे साथ जाकर संगीत सीखे ।

श्रीमती बाकमन—अच्छा उसे साथ ले जा रही हो ।

श्रीमती विल्टन—मैं यह नहीं चाहती कि वह संसार में निस्सहाय और अकेली रह जाए।

अरहार्ट—(झेंपकर, और कंधे सिकोड़कर) फ़ैनी की यही इच्छा है।

श्रीमती बाकमन—क्या मैं जान सकती हूँ कि यह प्रसिद्ध यात्रियों का दल कब कूच कर रहा है ?

श्रीमती विल्टन—हम आज रात ही जा रहे हैं। मेरी गाड़ी हिकलस के घर के सामने खड़ी हमारी प्रतीक्षा कर रही है।

श्रीमती बाकमन—(उसे पैरों से सिर तक देख कर) ओह ! तो यह बात है ?

श्रीमती विल्टन—(मुस्कान के साथ) हाँ।

श्रीमती बाकमन—फ़रीडा कहाँ है ?

श्रीमती विल्टन—वह गाड़ी में बैठ कर हमारी प्रतीक्षा कर रही है।

अरहार्ट—(दुःख और झेंप से) मेरी इच्छा थी कि इस स्थिति से आप किसी को भी दुःख न हो। इसलिए मेरा विचार था कि मैं आपको बिना मिले ही चला जाऊँ।

श्रीमती बाकमन—(दुःखपूर्वक) क्या तुम मुझे अन्तिम बार बिना मिले चले जाते ?

अरहार्ट—मेरे विचार में यह बहुत अच्छा होता। मेरा सामान बँधा पड़ा है। किन्तु जब आपने मुझे बुला भेजा...... (अपना हाथ आगे बढ़ाता है) माँ जी नमस्कार !

श्रीमती बाकमन—मुझे हाथ मत लगाओ।

अरहार्ट— (शान्तिपूर्वक) क्या यही आप की अन्तिम इच्छा है ?

श्रीमती वाकमन—(कठोरता से) हाँ ।

अरहार्ट—(मुड़ कर) मासी ईला जी नमस्कार !

ईला—(उसके हाथ पकड़ कर) अरहार्ट सुखी रहो, बेटा, सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करो ।

अरहार्ट—मासी जी, धन्यवाद। (श्री वाकमन को शीश झुका कर) पिता जी, प्रणाम ! (श्रीमती विल्टन को) चलो यहाँ से जल्दी चले चलें ।

श्रीमती विल्टन—हाँ, चलो ।

श्रीमती वाकमन—(कटु मुस्कान से) श्रीमती विल्टन, क्या आप उस कन्या को अपने साथ ले जाकर बुद्धिमत्ता से काम ले रही हैं ?

श्रीमती विल्टन—(व्यंग भरी मुस्कान से) श्रीमती वाकमन, पुरुषों का कोई भरोसा नहीं; स्त्रियों का भी । यदि मैं और अरहार्ट एक दूसरे से निभा न सके तो यह हम दोनों के लिए अच्छा होगा कि बेचारे को किसी और का आश्रय हो ।

श्रीमती वाकमन—आप क्या करेंगी ?

श्रीमती विल्टन—आप विश्वास रखें, मैं स्वयं अपना प्रबंध कर लूँगी । सब को नमस्कार ! (सब को शीश निवा कर बाहर जाती है । अरहार्ट भी कुछ समय ठहर कर उसके पीछे चला जाता है)

श्रीमती वाकमन—(ठंडी साँस भरके) अब मैं पुत्रहीन हो गई ।

वाकमन—(मन पक्का कर के) अब मुझे अकेले ही तूफ़ान का सामना करना पड़ेगा। मेरी टोपी ! मेरा कोट !

[शीघ्रता से दरवाज़े की ओर जाता है।]

ईला—(भयभीत हो कर उसे रोकती है) आप कहाँ जा रहे हैं ?

वाकमन—जीवन संग्राम का सामना करने के लिए — ईला मुझे जाने दो।

ईला—(उसे रोककर) नहीं, नहीं, मैं आप को बाहर नहीं जाने दूँगी। मुझे आप का मुख देख कर जान पड़ता है कि आप बीमार हैं।

[वह अपने आप को छुड़ा कर हाल कमरे के दरवाज़े से बाहर चला जाता है।]

ईला—(दरवाज़े में जाकर) श्रीमती वाकमन, इन्हें रोकने में मेरी सहायता करो !

श्रीमती वाकमन—(कमरे के भीतर ही खड़े रहकर) मैं इस जगत में किसी को रोकने का प्रयत्न नहीं करूँगी—इन दोनों को यहाँ से जाने दो, जितनी दूर इन को जाने की इच्छा हो। (चीख मार कर) अरहार्ट, मुझे छोड़ कर मत जाओ !

[भुजाएँ फैला कर वह दरवाज़े की ओर भागती है। ईला उसे रोकती है।]

चौथा अंक

[घर के बाहर एक खुला स्थान। इसके एक कोने में एक द्वार दिखाई देता है, जिसके बाहर पत्थर की बनी हुई सीढ़ियां हैं। घर की पिछली ओर ढलवान पर पेड़ उगे हुए हैं, जिनके पास एक जंगल है। बर्फ़ का तूफ़ान बन्द हो चुका है। आसपास की भूमि पर बरफ पड़ी हुई है। पेड़ों की टहनियां बरफ़ से झुकी हुई हैं। रात अंधेरी है, और आकाश पर बादल छाए हुए हैं। कभी कभी चांद का प्रकाश दिखाई देता है।

बाकमन, श्रीमती बाकमन, और ईला रेन्थीम सीढ़ियों पर खड़े हैं। थका हुआ बाकमन घर की दीवार पर झुक कर खड़ा है। उसने एक पुराने ढंग का कोट पहना हुआ है, और टोपी हाथ में पकड़ी हुई है। दूसरे हाथ में एक छड़ी है। ईला ने अपना कोट भुजा पर रखा हुआ है। श्रीमती बाकमन का शाल उस के कन्धों से नीचे गिरा हुआ है, और उस के बाल दिखाई दे रहे हैं।]

ईला—(श्रीमती बाकमन का रास्ता रोक कर) बहिन, उसके पीछे मत जाओ।

श्रीमती बाकमन—(डरी और घबराई हुई) मैं कहती हूँ मुझे जाने दो। मैं उसे अपने पास से जाने न दूंगी।

ईला—मेरी बात मानो, तुम्हारा प्रयत्न व्यर्थ है। वह बहुत दूर जा चुका है।

श्रीमती बाकमन—ईला, मुझे जाने दो। सारी सड़क पर मैं उसे चीखें मार-मार कर पुकारूंगी। वह अवश्य अपनी मां की पुकार सुनेगा।

ईला—वह तुम्हारी आवाज़ नहीं सुन सकता। निस्संदेह वह सलेज (Sledge) पर चढ़ कर चला गया है।

श्रीमती वाकमन—नहीं, नहीं, वह अभी नहीं गया।

ईला—मेरी बात मानो. वह घर से निकल चुका है।

श्रीमती वाकमन—(निराशा से) वह गाड़ी में बैठ कर अभी उससे बातें कर रहा होगा।

वाकमन—(उदासीन हँसी के साथ) फिर वह संभव है अपनी माँ की पुकार नहीं सुनेगा।

श्रीमती वाकमन—हाँ, वह नहीं सुनेगा (सुनते हुए) सुनो यह कैसी ध्वनि है ?

ईला—(सुन कर) यह सलेज की घंटियों की ध्वनि प्रतीत हो रही है।

श्रीमती वाकमन—(दबी चीख से) यह उसकी सलेज है ?

ईला—अथवा किसी और की ?

श्रीमती वाकमन—नहीं, नहीं, यह श्रीमती विल्टन की ही छत वाली सलेज है। मैं चाँदी की घंटियों की आवाज पहचानती हूँ। वह अभी यहाँ से पहाड़ी के नीचे से जाएँगे।

ईला—(शीघ्रता से) बहिन, यदि आप रोकर उसे बुलाना चाहती हैं, तो अभी यह करने का समय है। संभव है यह वे ही हैं। (घंटियों की आवाज समीप सुनाई देती है) बहिन जल्दी करो, वे हमारे बहुत समीप हैं।

श्रीमती वाकमन—(कुछ समय तक अस्थिरता की दशा में खड़ी रह कर कर्कशता से) नहीं, मैं उसके लिए चीख़-पुकार नहीं

करूँगी। अरहार्ट को मुझसे बहुत दूर चले जाने दो—उसको अपनी इच्छानुसार जीवन और सुख खोजने दो।

[घंटियों की आवाज अब सुनाई नहीं देती।]

ईला—(कुछ देर से) अब घंटियों की आवाज सुनाई नहीं देती।

श्रीमती वाकमन—ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे श्मशान में घंटियाँ बज रही हों।

वाकमन—(शुष्क हँसी के साथ) संभव है वह ऐसा मेरे लिए कर रहे हैं।

श्रीमती वाकमन—नहीं, मेरे लिए, और उसके लिए जो मुझे छोड़ कर चला गया है।

ईला—(विचार पूर्वक सिर हिला कर) कौन कह सकता है, संभव है यह घंटियों की ध्वनि, अरहार्ट को नवीन जीवन और आनन्द के समीप ले जा रही है।

श्रीमती वाकमन—(झट उत्तेजित होकर) क्या आप इसे जीवन और आनन्द कह रही हो ?

ईला—कुछ समय के लिए ही सही।

श्रीमती वाकमन—क्या आप यह सहन कर सकती हैं कि उस स्त्री के साथ वह जीवन और सुख का अनुभव करे ?

ईला—(उत्साह और भावुकता के साथ) मैं तो अपने दिल से चाहती हूँ कि ऐसा हो।

श्रीमती वाकमन—(तीव्रता से) तो आप में प्रेम की शक्ति मुझ से अधिक है।

ईला—(**बहुत दूर देखकर**) संभव है इसलिए कि मुझे प्रेम का कभी अनुभव नहीं हुआ, और मुझ में प्रेम की शक्ति जीवित है।

श्रीमती वाकमन—(**उसकी ओर देख कर**) यदि यह बात है तो बहुत जल्दी मेरी प्रेम शक्ति भी बढ़ जाएगी।

(**घर के अन्दर चली जाती है**)

ईला—(**कुछ समय व्याकुलता से वाकमन की ओर देखकर उसके कन्धे पर हाथ रखती है**) चलो, आप भी अन्दर चलो।

वाकमन—(**झट सचेत होकर**) मैं ?

ईला—आपके लिए बाहर बहुत ठंड है। चलो मेरे साथ कमरे के भीतर चलो।

वाकमन—(**क्रोधपूर्वक**) फिर ऊपर वाले कमरे में ?

ईला—नहीं, नीचे वाले कमरे में।

वाकमन—मैं वहाँ फिर कभी नहीं जाऊँगा।

ईला—तो फिर आप कहाँ जायेंगे ? इतनी रात गए, और इतने अन्धेरे में ?

वाकमन—(**टोपी पहन कर**) पहले मैं बाहर जाकर अपनी दबी हुई निधि देखूँगा।

ईला—(**व्याकुलता से उसकी ओर देख कर**) मुझे आपकी बात समझ में नहीं आई।

वाकमन—(**हंस कर और खांस कर**) ईला, डरो मत, मैंने किसी का धन लूट कर नहीं दवाया।

ईला—(**संकेत करके**) वह कौन है ?

[फोलडल पुराना कोट पहने हुए है। उस पर बरफ पड़ी हुई है। धीरे-धीरे चलता हुआ वह आगे बढ़ता है। वह कुछ लंगड़ा रहा है।]

वाकमन—अब आपको मुझ से क्या काम है ?

फोलडल—आप इतनी सरदी में बाहर खड़े हैं ? (सिर झुका कर) और श्रीमती वाकमन भी ?

वाकमन—(झटपट) यह श्रीमती वाकमन नहीं।

फोलडल—मुझे क्षमा करो। मेरी ऐनक बरफ में गुम होगई है। किन्तु, आप तो घर से कभी बाहर नहीं निकलते ?

वाकमन—अब समय आ गया है कि मैं घर से बाहर निकलूँ। पाँच साल जेल में, आठ साल ऊपर वाली छत पर रह कर और क्या करूँ ?

ईला—श्री वाकमन, मैं आप से याचना करती हूँ······

फोलडल—हाँ, हाँ।

वाकमन—परन्तु, मैं आपसे यह पूछता हूँ कि आप यहाँ कैसे आए ?

फोलडल—(द्वार की सीढ़ियों पर ही खड़े होकर मेरी यह हार्दिक इच्छा थी, कि मैंने आपको यहाँ आकर मिलूँ। उसी ऊपर वाले कमरे में।

वाकमन—पिछली वार मैंने आपको घर से बाहर निकाल दिया था, फिर भी आप मुझे मिलना चाहते थे ?

फोलडल—वह बात मुझे पीछे न हटा सकती थी।

वाकमन—आपके पांव को क्या हुआ, आप लंगड़ा रहे हैं ?

फोलडल—हाँ, मैं एक सलेज के नीचे आगया था।

ईला—नीचे आगए ?

फोलडल—एक छतवाली सलेज के नीचे।

वाकमन—ओ हो ?

फोलडल—उसमें दो घोड़े जुते हुए थे; पहाड़ी से उतरते समय वे इतनी तेज दौड़े, कि मैं जलदी से उनके रास्ते से दूर न हट सका और इसलिए……।

ईला—और इस प्रकार उन्होंने आपको कुचल दिया ?

फोलडल—श्रीमतीजी वे झट ही मेरे समीप आगए। मुझे ऐसा धक्का लगा कि मैंने बरफ पर लुढ़कना आरम्भ कर दिया। मेरा चश्मा गुम हो गया, और मेरा छाता टूट गया। (टांग मल कर) और मेरे टखने पर चोट लगी।

वाकमन—(मन में हंस कर) क्या आप जानते हैं कि उस सलेज में कौन था ?

फोलडल—नहीं, मैं कैसे देख सकता था ? सलेज पर छत था, और परदे लगे हुए थे। मुझे गिरा कर भी गाड़ीवान न रुका। किन्तु मैंने इस बात को बुरा नहीं मनाया। (विस्फोट के साथ) मैं बहुत प्रसन्न हूँ।

वाकमन—किस बात पर ?

फोलडल—मुझे समझ नहीं आता कि आपको क्या बताऊँ। एक बहुत अच्छी बात हुई है ! और यह आनन्दमय समाचार मैं आपको सुनाने आया हूँ।

वाकमन—(कर्कशता से) बताओ क्या है ?

ईला—पहले अपने मित्र को घर के भीतर तो ले जायें।

वाकमन—(निष्ठुरता से) मैंने आपसे कहा है कि मैं घर के अंदर नहीं जाऊँगा।

ईला—क्या आपने नहीं सुना कि यह गाड़ी के नीचे आ गए हैं !

वाकमन—जीवन में सब लोगों के साथ इस प्रकार की दुर्घटनायें हो जाती हैं। हम सब को फिर उछल कर खड़े हो जाना चाहिये। कोई देखे न कि हम को चोट लगी है।

फोलडल—आपका कथन बहुत गम्भीर है। किन्तु मैं अपनी बात थोड़े शब्दों में बता देता हूँ।

वाकमन—(कोमलता से) कृपया कहो।

फोलडल—जब मैं यहाँ से घर पहुँचा तो मुझे एक पत्र मिला। क्या आप बता सकते हैं कि वह किसका था ?

वाकमन—संभव है आपकी लड़की फराडा का।

फोलडल—ठीक, आपने झट जान लिया ! यह एक बड़ा लम्बा पत्र था। एक नौकर इसे लेकर आया। बताओ इसमें क्या लिखा था ?

वाकमन—इसमें उसने आपको और अपनी माता को अंतिम प्रणाम लिखा होगा।

फोलडल—ठीक। आप तो ज्योतिषी प्रतीत होते हैं। उस ने मुझे लिखा है कि श्रीमती विल्टन उसे बहुत चाहती हैं और वह उसके साथ बाहर जाकर संगीत सीखेगी। श्रीमती विल्टन ने संगीत का एक बड़ा अच्छा शिक्षक रखा है। वह भी उनके साथ जा रहा है। दुर्भाग्य से गायन की कुछ शाखाओं के विषय में उसे कुछ नहीं आता।

बाकमन—(हँसी से लोट पोट होकर) में सारी बात समझ गया ।

फोलडल—सायंकाल तक मेरी लड़की को इस बात का कुछ पता न था; फिर भी उसने मुझे पत्र लिखा, जो कि स्नेह से भरा था । इससे यह पता नहीं चलता कि उसके मन में अपने पिता के प्रति कोई घृणा थी । और यह कितना सूक्ष्म विचार था कि अंतिम नमस्कार उसने पत्र द्वारा किया । किंतु में उसे इस प्रकार न जाने दूँगा ।

बाकमन—(उसकी ओर देखकर) यह कैसे ?

फोलडल—उसने मुझे लिखा है कि वे कल सवेरे यहाँ से जा रहे हैं ।

बाकमन—क्या उसने यह लिखा है ?

फोलडल—किन्तु में भी मूर्ख नहीं हूँ, में सीधा श्रीमती विल्टन के घर जा रहा हूँ ।

बाकमन—आज शाम को ?

फोलडल—अभी बहुत देर नहीं हुई । यदि उसके घर के किवाड़ बन्द भी हुए तो भी मैं बिना संकोच के घंटी बजाऊँगा, क्योंकि मुझे फरीड़ा के मिलने से कोई नहीं रोक सकता । मैं उसे अवश्य मिलूँगा । नमस्कार, नमस्कार ।

[जाने लगता है ।]

बाकमन—जरा ठहरो, रास्ता कठिन है, और अच्छा है, कि वहाँ जाने का कष्ट न करो ।

फोलडल—इसलिए कि मैं लंगड़ा रहा हूँ ।

वाकमन—हाँ, और आप किसी दशा में भी श्रीमती विल्टन के घर के भीतर नहीं जा सकते।

फोलडल—हाँ, मैं ऐसा करके ही रहूँगा। मैं घंटी वजाता जाऊँगा, और किवाड़ खटखटाता जाऊँगा। कोई न कोई आकर मुझे अंदर जाने ही देगा। मुझे फरीडा को अवश्य मिलना है।

ईला—आपकी लड़की वहाँ से जा चुकी है।

फोलडल—(आश्चर्य पूर्वक) क्या वह जा चुकी है? आपको किसने कहा? मुझे कुछ संदेह है।

वाकमन—यह वात हमें उसके होने वाले शिक्षक से पता लगी है।

फोलडल—सचमुच? और वह कौन है?

वाकमन—एक अरहार्ट वाकमन।

फोलडल—(खुशी से फूल कर)आपका पुत्र! क्या वह उनके साथ जा रहा है?

वाकमन—हाँ, वह ही फरीडा को सिखाने में श्रीमती विल्टन की सहायता करेगा।

फोलडल—परमात्मा का धन्यवाद! मेरी लड़की वड़े अच्छे लोगों के साथ गई है। किन्तु क्या यह सच है कि वह यहाँ से चली गई है?

वाकमन—वह उसे उस सलेज में ले गए, जिसके नीचे आप आ गए थे।

फोलडल—(हाथ में हाथ डालकर) मैं वड़ा भाग्यवान हूँ। मेरी लड़की उस सजी हुई सलेज में गई।

वाकमन—(सिर हिलाकर) हाँ हाँ, वह उसी गाड़ी में गई है। क्या आपने उसकी चाँदी की घंटियाँ देखी थीं ?

फोलडल—हाँ, हाँ, आपने क्या कहा ? चाँदी की घंटियाँ शुद्ध चाँदी की ?

बाकमन—निःसन्देह ! प्रत्येक चीज शुद्ध पवित्र थी। वाहर भी और अंदर भी।

फोलडल—(तीव्रता से) यह विचित्र वात है कि लोगों का भाग्य भी किस प्रकार जागता है। मुझ में कविता का गुण था, वही फरीडा में संगीत-विद्या के रूप में प्रगट हो गया। मेरे कवि होने का कुछ तो लाभ हुआ। अब वह उसी विशाल संसार में जा रही है, जिसे देखने की उसकी प्रवल इच्छा थी। वह छतवाली सलेज पर बैठ कर गई, जिसमें चाँदी की घंटियाँ लगी हुई थीं।

वाकमन—और जिसके नीचे उसका पिता आ गया।

फोलडल—अजी मेरा विचार छोड़िये। उस बेचारी का कुछ बनने दो। तो मैं देर से आया। मैं अभी घर जाकर उसकी माता को आश्वासन देता हूँ। जब मैं घर से चला तो वह रसोई में बैठी रो रही थी।

बाकमन—रो रही थी ?

फोलडल—(मुस्कान के साथ) क्या आप यह सच मानेंगे ? जब मैं चला तो वह रो रो कर आँखें निकाल रही थीं।

बाकमन—और आप हँस रहे हैं ?

फोलडल—हाँ उस बेचारी को इन बातों की समझ नहीं।

अच्छा नमस्कार ! अच्छा हुआ कि मुझे घर लौटने के लिए 'ट्रेन' मिल गई । नमस्कार, नमस्कार !

[झुककर प्रणाम करके वह लँगड़ाता हुआ बाहर चला जाता है ।]

वाकमन—(कुछ समय तक चुपचाप रहकर) फोलडल नमस्कार! यह आपके जीवन की पहली दुर्घटना नहीं प्रिय मित्र !

ईला—(उसकी ओर दबी हुई चिन्ता से देखकर) आप इतने पीले दिखाई दे रहे हैं ?

वाकमन—इसका कारण यह है कि मैं इतने वर्ष कमरे के भीतर बन्द रहा हूँ, जहाँ वायु संचार न था ।

ईला—मैंने पहले कभी आपको इस दशा म नहीं देखा ।

वाकमन—नहीं, क्योंकि इससे पूर्व आपने कभी जेल से भागे हुए कैदी को नहीं देखा ।

ईला—मेरे साथ घर के भीतर चलो ।

वाकमन—मैं आपसे कह चुका हूँ कि फुसलाकर मुझे घर के अंदर ले जाने का प्रयत्न न करो ।

ईला—मैं आप से याचना करती हूँ । यह आपके लिए लाभदायक होगा ।

[नौकरानी किवाड़ खोलकर वहां खड़ी दिखाई देती है ।]

नौकरानी—मुझे क्षमा करो ! श्रीमती वाकमन ने मुझ से कहा है कि बाहर वाले कमरे को ताला लगा दो ।

वाकमन—(धीमी आवाज से ईला को) देख लिया वह फिर मुझे कमरे के अंदर बन्द करना चाहती हैं ।

ईला—(नौकरानी से) देखो श्री वाकमन का जी खराब है

इसलिये वह भीतर आने से पहिले कुछ देर ताजा हवा में रहना चाहते हैं।

नौकरानी—किन्तु श्रीमती बाकमन का यही आदेश है—

ईला—मैं किवाड़ को ताला लगा दूंगी। चाबी ताले में लगाकर यहाँ छोड़ जाओ।

नौकरानी—अच्छा तो मैं ऐसा ही करती हूँ।

[घर के अंदर चली जाती है।]

बाकमन—(कुछ समय चुप खड़ा रहकर सीढ़ियों से उतर कर खुले स्थान पर चला जाता है) ईला, अब मैं दीवारों के घेरे से बाहर आ गया। अब मुझे वहाँ कोई नहीं ले जा सकता।

ईला—(बाकमन के पास जाकर) किन्तु आपको वहाँ भी पूरी स्वतन्त्रता है। आप जिस प्रकार चाहें आ और जा सकते हैं।

बाकमन—कोमलता से परन्तु डरकर) अब मैं छत के नीचे कभी न रहूँगा। रात के समय इस प्रकार बाहर रहने में बड़ा आनन्द है। यदि अब मैं अंदर जाऊँ तो छत और दीवारें सिकुड़कर मुझे मक्खी की नाईं कुचल देंगे।

ईला—परन्तु आप फिर कहाँ जाएंगे?

बाकमन—अब मैं आगे ही आगे चलता जाऊँगा। मैं प्रयत्न करूँगा कि मैं स्वतन्त्रता, जीवन और मानव जाति के समीप जा सकता हूँ या नहीं। ईला क्या तुम मेरे साथ चलोगी?

ईला—मैं? अब?

वाकमन—हाँ, अभी !

ईला—किन्तु कहाँ ?

वाकमन—जितनी दूर मैं जा सकूँ ।

ईला—ओह ! पर सोचो कि आप क्या कर रहे हैं ? सरदियों की इस ठंडी रात में बाहर जाना !

वाकमन—(बैठे हुए गले से) ओह ! श्रीमती जी को अपने स्वास्थ्य की चिंता है ? हाँ, हाँ, मैं जानता हूँ कि आप कितनी कोमल हैं ।

ईला—मुझे आपके स्वास्थ्य की चिन्ता है ।

वाकमन—हो, हो ! एक मरे हुए पुरुष का का स्वास्थ्य । ईला मुझे आप पर हँसी आती है ।

[आगे को जाता है ।]

ईला—(उसके पीछे जाकर) आपने-अपने विषय में क्या कहा ?

वाकमन–एक मरा हुआ व्यक्ति । आपको याद नहीं कि मेरी पत्नी ने मुझसे कहा था कि तुम जहाँ हो, चुप करके वहाँ ही पड़े रहो ।

ईला—(स्थिरता पूर्वक अपना बड़ा कोट पहन कर) मैं आप के साथ चलूँगी ।

वाकमन–हाँ, हम दोनों का घना नाता है (आगे बढ़ कर) चलो आओ ।

[धीरे-धीरे बाईं ओर जंगल में जाते हैं । थोड़े समय में वे दिखाई नहीं देते । घर भी अब उनको दिखाई नहीं देता । धीरे-धीरे वे जंगल में बहुत आगे चले जाते हैं ।]

ईला—हम कहाँ जा रहे हैं ? मैंने यह स्थान पहिले कभी नहीं देखा।

वाकमन की आवाज़—(अधिक ऊँची होकर) बरफ़ में मेरे पैरों के चिह्न देख कर मेरे पीछे-पीछे आ जाओ !

ईला की आवाज़—किन्तु इतनी ऊँचाई पर चढ़ने की क्या आवश्यकता है ?

वाकमन की आवाज़—(समीप से) हमें सामने वाले रास्ते पर जाना है।

ईला—(उससे पीछे) किन्तु अब मुझ में आगे जाने की शक्ति नहीं।

वाकमन—(जंगल के किनारे से) चलो, चलो। वह दृश्य अत्र समीप ही है। वहाँ बैठने का स्थान भी है।

ईला—(वृक्षों के बीच आ कर) क्या आपको वह याद है ?

वाकमन—आप वहाँ विश्राम कर सकती हैं।

[जंगल से निकल कर वे एक मैदान में आ गए हैं। उनके पीछे एक पहाड़ है। एक ओर एक नवीन प्रदेश नयनगोचर होता है। दूर कई ऊँचे-ऊँचे पहाड़ दिखाई देते हैं। मैदान के बाईं ओर एक वृक्ष के नीचे एक बेंच पड़ा हुआ है। चारों ओर बरफ़ पड़ी हुई है। वाकमन और उसके पीछे ईला बरफ़ में कठिनाई से चलते हुए दिखाई देते हैं।]

वाकमन—(ढलान के किनारे पर ठहर कर) ईला यहाँ आओ और देखो।

ईला—(उसके पास आकर) आप मुझे क्या दिखाना चाहते हैं ?

वाकमन—(संकेत कर के) यह स्थान कितना खुला हुआ है। यहाँ से आस पास का सारा देश दिखाई देता है।

ईला—पहले भी कई वार हम दोनों इस वेंच पर बैठा करते थे और अपने भविष्य के स्वप्न देखा करते थे।

वाकमन—उस समय हम स्वप्नों की दुनियाँ देखा करते थे।

ईला—अब वे सुहाने स्वप्न बरफ़ के नीचे दब चुके हैं। जिस वृक्ष के नोचे हम वैठा करते थे वह भी सूख चुका है।

वाकमन—(सुनी अनसुनी करके) क्या तुम जहाज़ों का धुआँ उठता हुआ, समुद्र की चट्टानों से घिरे हुए मार्ग में देख रही हो ?

ईला—नहीं ।

वाकमन—मैं देख सकता हूँ। वह सारे संसार में मित्रता का भाव फैलाते हैं। इनके कारण हज़ारों घरों में प्रकाश और उष्णता का संचार होता है। यह मेरे जीवन का महान् आदर्श था।

ईला—(कोमलता से) और यह केवल एक स्वप्न ही रहा।

वाकमन—हाँ ! (सुन कर) प्रिय ईला सुना नदी के निचली ओर कारखाने चल रहे हैं। मैं इसी प्रकार के कारखाने बनाना चाहता था। इन कारखानों में दिन रात काम होता है। पहियों की आवाज़ सुनो। क्या तुम्हें नहीं सुनाई दे रही, ईला ?

ईला—नहीं !

वाकमन—मैं इसे सुन सकता हूँ।

ईला—(व्याकुलता से) मेरे विचार में यह आप की भूल है।

वाकमन—(दैव ज्ञान से) यह केवल मेरे राज्य का थोड़ा सा भाग है।

ईला—कौन सा राज्य ?

वाकमन—मेरा राज्य जिस पर मैं विजय पाने वाला था, और मैं मर गया।

ईला—(धीमी आवाज़ से) आप यह कैसी बातें कर रहे हैं।

वाकमन—और मेरे राज्य का कोई रक्षक नहीं। इस पर सब चोर और डाकू अधिकार जमा कर बैठे हैं। पहाड़ों की ओर देखो कैसे आकाश से बातें कर रहे हैं। ये मेरे राज्य-कोष का भाग थे।

ईला—किन्तु अब तो आप की राज्य-भूमि से केवल अत्यन्त ठंडी हवा का झोंका आ रहा है।

वाकमन—परन्तु यह मुझे तो जीवन प्रदान करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे राज्य निवासी मुझे अपना प्रणाम भेज रहे हैं। इन पहाड़ों के भीतर दबी हुई धातुओं को मेरा संदेश है कि मैंने उन्हें कैद से छुड़ाने का पूरा प्रयत्न किया। मुझे उनसे हार्दिक प्रेम है।

ईला—(अपनी व्याकुलता को दबा कर) आपको खानों और जंगलों से सदा प्रेम रहा है। आप सदा उनके विषय में

सोचते रहे हैं। किन्तु यहाँ दिन के प्रकाश में एक मानव हृदय है जो आपके प्रेम से भरा हुआ है। आपने इस दिल को कुचल दिया। न केवल इतना ही, परन्तु उसे बेच दिया......।

वाकमन—(**काँप कर**) आपका विचार है कि मैंने सब कुछ शक्ति और यश पाने के लिए किया ?

ईला—मेरा यही अभिप्राय है। आज से पहिले भी मैं यह कह चुकी हूँ कि आपने उस स्त्री के प्रम को कुचल दिया, जो आप को बहुत चाहती थी, और जिसे आप भी चाहते थे। (**भुजा उठा कर**) इसलिए मैं यह भविष्य वाणी करती हूँ कि इस हत्या के लिए जो मूल्य आपने माँगा था, वह कभी आप को नहीं मिलेगा। आप अपने अँधेरे और ठंडे राज्य के अंदर कभी न जा सकेंगे।

वाकमन—(**लुढ़क कर बेंच के समीप जाकर धम से उस पर बैठ जाता है**) मुझे भय है कि आपकी भविष्य वाणी ठीक होगी ?

ईला—(**उसके पास जा कर**) इस से मत डरो। यदि ऐसा हुआ, तो यह आप का सौभाग्य होगा।

वाकमन—(**चीख मार कर अपनी छाती को पकड़ता है**) आह ! (**धीमी आवाज से**) अब मुझे जाने दो।

ईला—(**उसे हिला कर**) आपको क्या हुआ ?

वाकमन—मेरे दिल पर किसी ने बरफ़ का हाथ रक्खा।

ईला—क्या आपको फिर ऐसा अनुभव हुआ ?

बाकमन—(बेंच पर लेट कर) यह बरफ़ का हाथ नहीं था, धातु का हाथ था।

ईला—(अपना गरम कोट फाड़ कर उसके ऊपर डाल देती है) यहाँ लेटे रहो, मैं किसी को सहायता के लिए बुला कर लाती हूँ।

[दाईं ओर से एक दो पग आगे जाकर, वह फिर लौट आती है। उसकी नाड़ी देख कर उसके मुख पर हाथ रखती है।]

ईला—(कोमलता से) जान बाकमन, परमात्मा ने यह बहुत अच्छा किया।

[उसे अपने कोट से ढाँप कर, स्वयं बरफ़ पर गिर पड़ती है। चारों ओर सन्नाटा है।]

[श्रीमती बाकमन गरम कोट पहने जंगल में से होकर आती है। नौकरानी उसके आगे आगे लालटेन लेकर चल रही है।]

नौकरानी—(बरफ़ पर रोशनी फेंक कर) मालिकन, यह देखो उनके पैरों के निशान।

श्रीमती बाकमन—(इधर-उधर देख कर) वह देखो, वे दोनों बेंच पर बैठे हुए हैं (आवाज़ देकर) ईला !

ईला—(खड़े होकर) क्या आप हमें खोज रही हैं ?

श्रीमती बाकमन—(कर्कशता से) मुझे तो यह कहना ही पड़ता है।

ईला—(संकेत करके) देखो वह लेटे हुए हैं।

श्रीमती बाकमन—क्या सो रहे हैं ?

ईला—यह वह गहरी और लम्बी नींद है जो कभी नहीं खुलती।

श्रीमती वाकमन—(**विस्फोट के साथ**) ईला ! क्या इसने आत्म-हत्या की है ?

ईला—नहीं !

श्रीमती बाकमन—(**दुःख से मुक्त होकर**) आत्म-हत्या नहीं की । (**नौकरानी से**) सहायता के लिए खेतों में से किसी को वुला लाओ ।

नौकरानी—हाँ, मैं जाती हूँ । (**अपने आप से**) परमात्मा हमें बचाए ।

[**जंगल में से होकर चली जाती है ।**]

श्रीमती वाकमन—(**बेंच के पीछे खड़ी होकर**) रात की वायु ने इनको मार दिया ।

ईला—ऐसा ही जान पड़ता है ।

श्रीमती वाकमन—वह बलवान था, किन्तु……

ईला—(**बेंच के सामने आकर**) वहिन आप इनको नहीं देखेंगी ?

श्रीमती वाकमन—नहीं, नहीं, नहीं (**धीमी आवाज से**) जान वाकमन खान खोदने वाले का बेटा था । यह स्वच्छ वायु में नहीं रह सकता था ।

ईला—मेरे विचार में इनका देहान्त ठण्डी हवा के कारण हुआ ।

श्रीमती वाकमन—(**सिर हिलाती है**) क्या आप ठंड के कारण कहती हैं ? ठंड ने तो इनको चिरकाल से मार दिया हुआ था ।

ईला—(**उसके साथ सहमत होकर**) हाँ—और हम दोनों को छाया बना दिया हुआ था।

श्रीमती बाकमन—आप ठीक कह रही हैं।

ईला—(**दुःखभरी मुस्कान से**) एक मरा हुआ मनुष्य और दो छायाएँ—शीत ने हम सबको क्या बना दिया !

श्रीमती बाकमन—हाँ, दिल पर बरफ जमने का परिणाम —और अब मेरा यह विचार है कि हम दोनों बहिनों को फिर मिल जाना चाहिए।

ईला—यह बड़ा शुभ विचार है।

श्रीमती बाकमन—हमने एक साथ जन्म लिया था। दोनों बहिनें उस पुरुष के मृत शरीर के पास खड़ी हैं जिसे हम दोनों प्रेम करती थीं।

ईला—हम दो छाया मात्र हैं। एक मरे हुए पुरुष के पास।

[श्रीमती बाकमन बेंच के पीछे से ईला से हाथ मिलाती है, जो बेंच के सामने खड़ी है।]

इति